।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 12 अंक : 133 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जून– 2019 30/–प्रति

File Photo

भौतिक विज्ञान और अध्यात्म विज्ञान

भौतिक विज्ञान, आध्यात्मिक शक्ति की देन है। अतः विज्ञान और अध्यात्म में भेद करना भूल है। जिस समय आध्यात्मिक शक्ति का सही ज्ञान, भौतिक विज्ञान के वैज्ञानिकों को हो जाएगा, तत्काल समस्या का समाधान हो जाएगा। जब वैज्ञानिकों को उस परमसत्ता की शक्ति का ज्ञान हो जाएगा तो उनका भ्रम खत्म हो जाएगा। जब इस प्रकार भौतिक विज्ञान, अध्यात्म विज्ञान के अधीन कार्य करने लगेगा, पृथ्वी पर स्वर्ग उतर आएगा।

– समर्थ सद्‌गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्‌गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

विश्व शांति- ''जब तक संसार में मनुष्य शरीर-रूपी सुन्दर ग्रन्थ को पढ़ने का दिव्य विज्ञान प्रकट नहीं होगा, तब तक 'विश्व शान्ति' का भाव 'मृगमरीचिका' ही बना रहेगा।''

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नम:"

स्पिरिचुअल साइंस
Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 12 अंक : 133 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जून – 2019

वार्षिक 300/- ❋ द्विवार्षिक : 600/- ❋ आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- ❋ मूल्य 30/-

❖

संस्थापक एवं संरक्षक :

पूज्य सद्‌गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग

❖

सम्पादक :

रामूराम चौधरी

कार्यालय :

Spiritual Science

पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अ नु क्र म

मनुष्य रूप में भगवान्..4
स्वयं का अवलोकन (सम्पादकीय)..5
महाप्रयाण दिवस..6
सद्‌गुरुदेव से स्वयं करें प्रार्थना..7
सद्‌गुरुदेव का प्रवचन..8
Beginning of my Spiritual Life..9
विश्व शांति का जनक–वेदांत दर्शन..10–12
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति..13–16
चुनाव अपने विवेक पर (कहानी)..17–18
चित्र पृष्ठ..19–22
भटिण्डा व ओसियां में सिद्धयोग शिविर..23
आध्यात्मिक सत्संग?..24–26
ज्ञान का लक्ष्य..27
सद्‌गुरुदेव की दिव्य लेखनी से..28
અદ્ભુત સિદ્ધયોગ..29
व्यक्ति बूढ़ा कब होता है?..30
मेरे गुरुदेव..31
योगियों की आत्मकथा..32
योग के बारे में..33
योग के आधार..34
मनुष्य और विकास..35
भगवान् की अवतरण–प्रणाली..36
सनातन धर्म (हिन्दू धर्म) का उत्थान..37
ध्यान विधि..38

www.the-comforter.org

मनुष्य रूप में भगवान्

भगवान् स्वयं मार्ग पर चलकर मनुष्यों को राह दिखाने के लिये मनुष्य का रूप धारण करते हैं और बाहरी मानव-प्रकृति को स्वीकार करते हैं। पर इससे उनका 'भगवान्' होना खत्म नहीं हो जाता। यह एक अभिव्यक्ति होती है, बढ़ती हुई भागवत चेतना अपने-आपको प्रकट करती है।

यह मनुष्य का भगवान् में बदला जाना नहीं है। श्रीमां अपने आंतर स्वरूप में बचपन में भी मानवत्व से ऊपर थी। इसलिये बहुत से 'लोगों' का जो उपर्युक्त मत है वह भ्रमात्मक है।

श्रीमां **अतिमानस** को नीचे लाने के लिये ही आती है और अतिमानस का अवतरण होने पर उनका यहाँ पूर्ण रूप से अभिव्यक्त होना संभव होता है।

-महर्षि श्री अरविन्द

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

स्वयं का अवलोकन

आध्यात्मिक पथ पर चलनेवाले सभी व्यक्तियों को पथ की कठिनाइयों और परीक्षाओं का सामना करना ही पड़ता है; इनमें कुछ तो उनकी अपनी प्रकृति के तथा कुछ बाहर की परिस्थितियों के फलस्वरूप सामने आती हैं। प्रकृति की कठिनाइयाँ तब तक बार-बार आती रहेगी, जब तक तुम उन पर विजय न प्राप्त कर लोगे। इनका सामना करने के लिए धैर्य और शक्ति दोनों की आवश्यकता है। पर परीक्षाओं एवं कठिनाइयों के उत्पन्न होने पर व्यक्ति की प्राणिक सत्ता अवसाद की ओर झुक जाती है।

यह किसी एक के साथ विशेषकर नहीं हुआ है, सभी साधकों के साथ ऐसा ही होता है। यह साधना सम्बन्धी अयोग्यता का द्योतक नहीं है, न ही यह असहायता की भावना को उचित ठहराता है किन्तु आराधनाशील साधक को अवसादरूपी प्रतिक्रिया को जीतने के लिए सद्गुरुदेव द्वारा बताए मंत्र का सघन जाप व नियमित ध्यान करना चाहिए और सहायता के लिए समर्थ सद्गुरुदेव की दिव्य शक्ति का आवाहन करना चाहिए ।

सभी जो इस पथ पर दृढ़ता से चलते रहते हैं, अपने आध्यात्मिक भविष्य के संबंध में विश्वस्त रह सकते हैं। यदि कोई लक्ष्य तक पहुँचने में असफल रहता है तो उसका दो में से कोई एक कारण होता है। या तो वह इस मार्ग को ही छोड़ देता है या किसी महत्त्वाकांक्षा, अहंकार अथवा कामना के प्रलोभन में पड़कर भगवान् पर अपनी सच्ची निर्भरता से विचलित हो जाता है।

आराधना काल में साधक को विभिन्न प्रकार की सिद्धियाँ हो जाती है। साधक को किसी भी सिद्धि की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए क्योंकि सिद्धियाँ पथ से डिगाने वाली परियाँ होती हैं, जो साधक को चकनाचूर कर देती है।

जिस प्रकार हम यात्रा करते हैं, तब हमारी यात्रा के दौरान हम कितने स्टेशनों, भव्य मंदिरों व अन्य स्थलों से गुजरते हैं लेकिन हमारा लक्ष्य तो अंतिम ध्येय तक जाना होता है इसलिए चाहे हम बस, ट्रेन, कार या किसी भी वाहन में बैठे है केवल दृष्टा भाव से देखते रहते हैं, किसी भी प्रकार की क्रिया नहीं करते हैं ठीक उसी प्रकार साधक को बिना किसी घमण्ड के, केवल दृष्टा बनकर आध्यात्मिक साधना करनी चाहिए। अहम किसी भी प्रकार का घातक ही होता है। चाहे वह धार्मिक, सामाजिक या आध्यात्मिक हो। जितने भी संतों के अनुभव हैं, उनके अनुसार आध्यात्मिक अहम सबसे घातक होता है। इसलिए साधक को सद्गुरुदेव से प्रार्थना करते हुए, बिना किसी लोभ, लालच के, निरन्तर सद्गुरुदेव द्वारा बताई हुई आराधना को करते रहना चाहिए ।

किसी भी आध्यात्मिक पुरुष के पीछे भी गादी व उसकी शक्ति को हड़पने की होड़ लगी रहती है। जबकि आध्यात्मिक पुरूष के कार्य की भौतिक रूप से चिंता करने की जरूरत नहीं होती है क्योंकि वह परम शक्ति अपने योग्य शिष्य को अपने आप ढूँढ़ लेती है। वह शक्ति किसी भी अन्य से किसी भी प्रकार की कोई सलाह मशविरा नहीं करती है। भारतीय इतिहास के अनुसार अवतारों की बात है तो उनके पीछे उनका कोई गादीपति नहीं होता है। उनका स्थापित मिशन ही उनकी दिव्य शक्ति से फलता-फूलता है।

आज ऐसे बहुत से शिष्य है जो छोटी छोटी सिद्धियों के कारण व्यर्थ में भटक रहे हैं। सिद्धियों के संबंध में पूज्य सद्गुरुदेव ने अपने कर कमलों से एक पृष्ठ लिखकर दिया था जिसमें स्पष्ट लिखा है कि साधक को सिद्धियों के चक्र में नहीं पड़ना चाहिए।

जो गुरु के चरणों की धूली जितना अपने आपको समझता है, उसी में सार्थकता है। इस मिशन के प्रसार-प्रचार में भी एक सच्चे प्रसारक को हमेशा, गुरुदेव की शक्ति को ही सर्वोच्च मानकर, अपने आपको तो केवल एक पोस्टमैन की भूमिका निभानी चाहिए। किसको यह ज्ञान देना है और किसको नहीं, इसका फैसला वह दिव्य शक्ति अपने आप कर लेगी।

गुरुदेव श्री सियाग अपने प्रवचन में हमेशा एक ही बात कहते हैं कि **''केवल नाम जपो, नाम जप से परिवर्तन आएगा।''** साधक को अपनी होशियारी से फालतु के नियम कानून कायदे व अन्य आराधना की पद्धतियों को नहीं अपनाना चाहिए। जब वो प्रथम बार सद्गुरुदेव से दीक्षित हुआ था। उस सयम उनके मन में जो अपने आत्म उत्थान के भाव थे, उसी भाव को लेकर ही आगे बढ़ना चाहिए।

समय समय पर अपना आत्मावलोकन करते रहना चाहिए कि वह अपने सद्गुरुदेव के बताए पथ के अनुसार कहाँ पर खड़ा है?

-संपादक

।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः ।।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के

" महाप्रयाण दिवस "

(5 जून, 2019)

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी
(ब्रह्मलीन)

**"देखो, मैं कल्कि अवतार हूँ।
मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है।
मेरे जाने के बाद मेरी 'तस्वीर' तो नहीं मरेगी !
वह आपको 'जवाब' देगी।" –सद्गुरुदेव सियाग**

जोधपुर आश्रम में बुधवार, 5 जून 2019, सुबह 10:30 बजे, सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र के साथ सामूहिक ध्यान का कार्यक्रम आयोजित होगा। सद्गुरुदेव के पावन चरण कमलों में यही प्रार्थना है कि इस सिद्धयोग दर्शन के प्रचार-प्रसार में लगे सभी साधकों को सदैव सद्गुरुदेव का मार्ग दर्शन व आशीर्वाद मिलता रहे। सोमवार, 5 जून, वर्ष 2017 को पूज्य सद्गुरुदेव ने भौतिक देह का त्याग कर दिया था। लेकिन गुरुदेव की आध्यात्मिक शक्ति पूर्व की भांति ही कार्य कर रही है, जैसा कि स्वयं सद्गुरुदेव ने कहा है कि "मेरी आध्यात्मिक शक्ति इस धरा पर मानवता के कल्याण हेतु सदैव कार्य करती रहेगी, जब तक ये दुनिया रहेगी।"

इस धरा पर **'पार्थिव-अमरत्व'** (Terrestrial Immortality) की स्थापना हेतु मानव से अतिमानव की ओर जाने वाले दिव्य पथ पर विश्व मानवता को अग्रसर कर, मन मंदिर में ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति के लिए समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने मानव जाति के उद्धार हेतु संजीवनी मंत्र उद्घाटित कर दिया।

अपने सर्वांगीण विकास के लिए सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी में सुने हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक रूप से सघन जप व नियमित ध्यान ही एक मात्र साधन है।

सद्गुरुदेव के कथन :- 'मनुष्य पापी नहीं परमात्मा है।' 'सनातन धर्म ही विश्व धर्म होगा।' 'मानव जाति में सतोगुण का उत्थान कर, त्रिगुणातीत जाति में बदलकर, उसका दिव्य रूप में रूपान्तरण ही सद्गुरुदेव का दिव्य मिशन है।'

सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र व उनकी तस्वीर मनुष्य मात्र तक पहुँचे, यही हमारा परम कर्त्तव्य है।

सद्गुरुदेव के दिव्य शब्दों में-"हमारे विज्ञान में Time and Space (समय और जगह) की कोई Value (मूल्य) नहीं है। आप मेरे में हो और मैं आप में हूँ। आप जहाँ याद करोगे, मैं वहाँ Present (उपस्थित) रहूँगा। 'गुरु' अगर वास्तव में 'गुरु' है तो Omnipresent (सर्वव्यापक) है।"

" इसमें (सिद्धयोग में) 'गुरु', मन को रोकता है "गुरु क्या है ? ये शरीर गुरु नहीं हो सकता, ये तो कल चला जाएगा। 'गुरु' तो अजर-अमर है, अनादि- अनन्त है।"

प्रत्येक साधक अपने-अपने स्तर पर, सद्गुरुदेव द्वारा स्थापित मिशन के प्रचार-प्रसार में यथाशक्ति, अपना योगदान करें।

प्रचार-प्रसार सामग्री के लिए एवं अन्य जानकारी हेतु मुख्यालय पर सम्पर्क करें।

कार्यक्रम में समस्त जिज्ञासु साधक गण सादर आमंत्रित हैं।

संजीवनी मंत्र दीक्षा के लिए डायल करें – 07533006009

मुख्यालय : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत – 342001

- 0291-2753699 +91 9784742595

Web : www.the-comforter.org Email : avsk@the-comforter.org

www.the-comforter.org

समस्या के समाधान हेतु

सद्गुरुदेव से स्वयं करें प्रार्थना

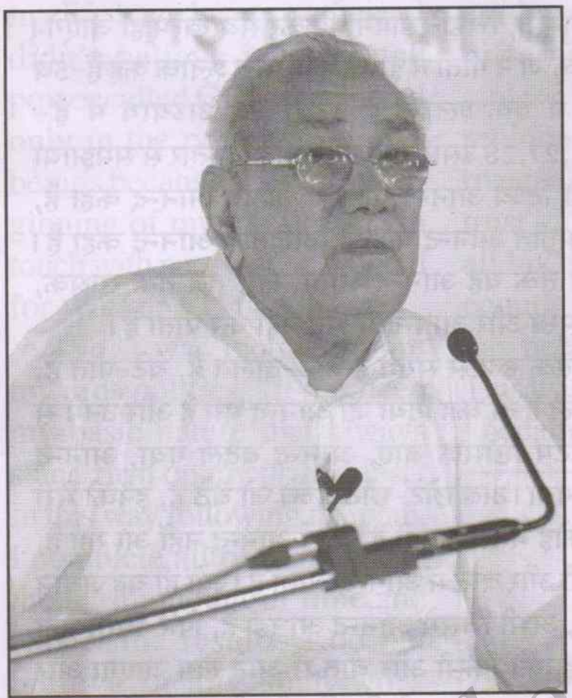

आप किसी भी समस्या के समाधान हेतु ध्यान से पहले, मन ही मन गुरुदेव से करूण प्रार्थना करें। गुरुदेव आपको, आपके अंदर से ही जवाब देंगे। गुरुदेव प्रवचन में कई बार कहते थे कि पूरा ब्रह्माण्ड आपके अंदर है। देवता और दानव दोनों ही अंदर है। इसलिए आपकी हर समस्या का समाधान भी अंदर से ही होगा।

साधक चाहे कितना ही पहुँचा हुआ क्यों ना हो, उसके प्रति श्रद्धा रखना या उससे ये कहना कि मेरी अमुक समस्या है, आप गुरुदेव से ध्यान में पूछकर बताओ कि इसका क्या हल हो सकता है ? यह पूछने वाले और बताने वाले दोनों ही साधकों के लिए अच्छी बात नहीं है। क्योंकि गुरुदेव मनुष्य मात्र का पूर्ण विकास करने आये हैं, और इसके लिये साधक को गुरुदेव द्वारा निर्दिष्ट साधना पथ पर स्वयं को ही चलना पड़ेगा। प्रत्येक साधक, सघन मंत्र जप और नियमित ध्यान से स्वयं को पूर्ण सक्षम बनाएँ। गुरुदेव ने कहा है कि-''आप मेरे से अंतर्मन से जुड़ो, 'गुरु' आपके अंदर बैठा है, वह आपको अंदर से हजार गुणा सही (Correct) जवाब देगा।''

इसलिए आप केवल मात्र सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के प्रति ही निष्ठावान रहें। –साधक

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव का प्रवचन

मानसिक तनाव का ठीक होना

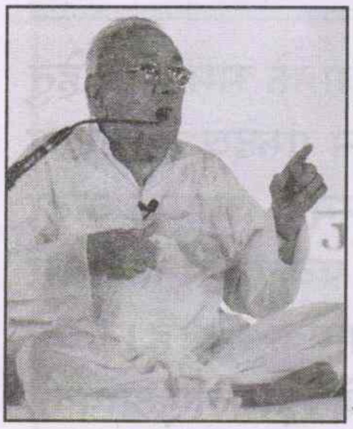

अब एक शारीरिक बीमारी खत्म हो गई। अब दूसरी बीमारी, आज संसार को, जो परेशान कर रही है -वह है-मानसिक तनाव से संबंधित बीमारी, मेन्टल टेंशन से संबंधित है।

भौतिक विज्ञान वालों ने कफ और पित को तो किसी हद तक कंट्रोल (नियंत्रण) किया है, मगर वात को टच (स्पर्श) भी नहीं पर पा रहे हैं। स्नायु मण्डल की पेचीदगी (जटिलता) इतनी है, वो समझ में नहीं आ रहा, डॉक्टर टच करते हुए डरते हैं। केवल नशे की दवाई देकर सुला देते हैं। वह नशे में हो जाता है, उसमें एनर्जी रीस्टोर थोड़ी ही होती है। नेचुरल (प्राकृतिक) नींद होती है उसमें और इसमें (कृत्रिम नींद) बहुत अन्तर होता है। इसमें (प्राकृतिक नींद) मानसिक तनाव खत्म हो जाता है, वह भी परिवर्तन एक ठोस दार्शनिक आधार पर आता है। मैंने आपको पहले बताया कि यहाँ (सिद्धयोग दर्शन में) कल्पना की कोई गुँजाइश नहीं है, कल्पना करना तो शेख चिल्ली का काम है। आपने सुना होगा राम के नाम में नशा होता है। संतों ने उसको 'नाम खुमारी' कहा है, हरि नाम की खुमारी।

नानक देव जी महाराज कहते हैं कि -

भाँग-धतूरा नानका उतर जाय प्रभात।
नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन-रात।।

भाँग धतूरा रात को पीयो और सो जाओ; सुबह साफ।

कबीर दास भी कहते हैं-

नाम अमल उतरे न भाई।
और अमल छिन्न- छिन्न चढ़ी उतरे।
नाम अमल दिन बढ़े सवाया।।

नाम का नशा उतरता नहीं है। मैं आपको जो नाम बताऊ, उसको आप जपोगे तो आपको मादकता आ जाएगी। इन्टोक्शिकेशन विदाऊट ड्रग (Intoxication Without Drug) डॉक्टर बड़े हैरान हैं और सैकड़ों डॉक्टर मेरे शिष्य हैं। इंजीनियर तो हजारों हैं। इस प्रकार नाम जप से 24 घंटे राउण्ड दी क्लॉक, एक आनंद आता रहेगा और आपका गुस्सा, चिड़चिड़ापन, फिकर सब खत्म हो जाएंगे। भगवान् कृष्ण ने गीता में इसके लिए पाँच श्लोक कहे हैं-5वें अध्याय में एक श्लोक है 21वाँ 6वें अध्याय में हैं-4,15,21,27,28 उसमें भगवान् ने बड़े विस्तार से समझाया है। उसको दिव्य आनन्द कहा है, अक्षय आनन्द कहा है, इन्द्रियाँ अतीत आनन्द कहा है, अद्वितीय आनन्द कहा है। मगर जब तक यह आनन्द आता नहीं, तब तक साधक, भौतिक सुख और आनन्द में भेद नहीं कर पाता है।

भौतिक रूप से सुखी है-धन-दौलत हैं, बेटे-पोते हैं, कार-बंगले हैं तो कह दिया जी आनन्द मय है और उनमें से एक आईटम खिसक जाए, आनन्द बदल गया, आनन्द खत्म हो गया। अब छोटे-छोटे बच्चे जो बैठे हैं, इनको मेरी बात से कोई मतलब नहीं है, कोई आनन्द नहीं आ रहा है, इन्हे किसी और बात में आनन्द आता है। ज्यों ही यह जवान हो जाएंगे, अभी जिसमें आनन्द आ रहा है, फिर उसमें नहीं आएगा, इनको किसी और बात में आने लग जाएगा और साठ वर्ष से ऊपर निकले कि किसी और बात में आनन्द आएगा तो वह आनन्द नहीं है, वह तो इन्द्रियों से अनुभव होने वाला-सुख-दुःख है।

आनन्द तो इन्द्रियातीत है तो जब तक यह आपको नहीं आएगा, आपको नहीं पता लगेगा कि किसी इन्द्रिय विशेष से अनुभव न होने वाला आनन्द, इन्द्रियातीत आनन्द है क्या? **इस प्रकार आप नाम जप करो तो उससे आपको एक आनन्द आने लग जाएगा, उससे सम्बन्धित बीमारियाँ-हाईब्लडप्रेशर, लो ब्लडप्रेशर, उन्माद, पागलपन स्वतः ही ठीक हो जाएंगे।** हजारों को हो रहा है तो तेल खाओ, चाहे नमक खाओ कितना ही, हाईपर टैंशन नहीं होगा। वह तो एक सिस्टम से रिलेटेड बीमारी है न मेंटल टेंशन से सम्बन्धित है और हरि नाम के जप से जो आनन्द आने लगेगा, वह टेंशन खत्म हो जाएगा उससे सम्बन्धित, उससे रिलेटेड बीमारी ठीक हो जाएँगी, चाहे वह कोई हो तो इस प्रकार शारीरिक रोग खत्म हो जाएंगे, मानसिक रोग खत्म हो जाएँगे।

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

क्रमशः अगले अंक में...

Beginning of my Spiritual Life

-Gurudev Shri Ramlal ji Siyag

I, in the initial stages of my life have been an atheist. I didn't believe in any such power called GOD. I believed only in the power of human beings because at the very beginning of my job, I came in touch with people who worked for Worker's Union.

So, I was inclined more towards politics." It has been my basic nature that always stand firm on my principles." In this way following my path, I complete all of my work in the least amount of time and expect the results. I do not believe in any such work which doesn't bear any result even after a long span of time.

I believe that the way, taste of any food is realised right after putting it in the mouth, in the same way every work should bring about a direct experience. In the absence of any result, I consider doing any work a waste. Today's "Bahirmukhi" (outwardly focussed) spiritual practices do not result in any kind of direct realisation. Relying on superstitions alone, man remains entangled in different "karmkand" (religious activities) all through his life, still he doesn't get anything.

The religious masters of four different religions of this era have very cleverly made different beliefs and principles. That the result of all religious activities will be derived in next life, with faith and trust, the man is made to slog all his life. In this way life of countless people in this world has been made meaningless. This was the reason that slowly I became completely an athe-

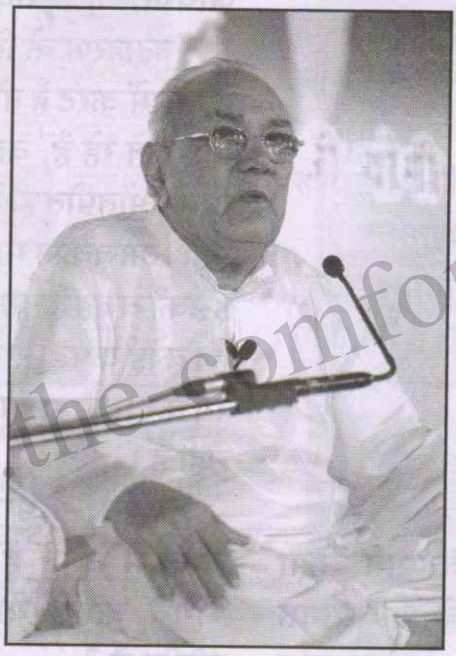

ist since it is my nature, that I say what I think and I also do what I say. People are atheist only for name sake, the atheism disappears when faced with difficulty of a small nature. Country like Russia also had re-opened the prayer places of all the religions during the World War Second.

But like Kalidas, I firmly stood my ground. This way when this extremity tried to cross over its ultimate limit, there was an explosion. I was in the same condition as faced by the inhabitants of Hiroshima. It was such a strange and horrifying mental state that nothing was comprehensible. All kinds of physical treatments failed. The condition was so fearsome that I myself started thinking that now the end time was not very far off. In this condition my friend Mr. Ram Dubey suggested the chanting of Gayatri Mantra. The power in which I didn't believe at all, due to the fear of death, happily agreed to do as told.

At that time my mental state was such where on one side the death was ready to engulf me and on the other side, I was fervently praying to that unseen power to save my life. In such a condition, how will be the concentration and fervent appeal, can be easily understood. The goal was to do one lakh twenty-five thousand chants in proper manner. This took about three and a half months to complete.

Count. to Next Edition...

www.the-comforter.org

विश्व शांति का जनक-वेदांत दर्शन
-सद्गुरुदेव सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम से 'स्पिरिचुअल साइंस' मासिक पत्रिका से पहले सन् 1994-95 में एक अखबार छपता था-'सवितादेव संदेश'। इसमें 'विश्व शांति का जनक-वेदांत दर्शन' शीर्षक में समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने कुछ प्रश्नों के सहज और सटीक जवाब दिये थे, जो साधकों के लिए आज भी बहुत ही प्रेरणादायी और महत्त्वपूर्ण हैं-उनको पुनः प्रकाशित किया जा रहा है-

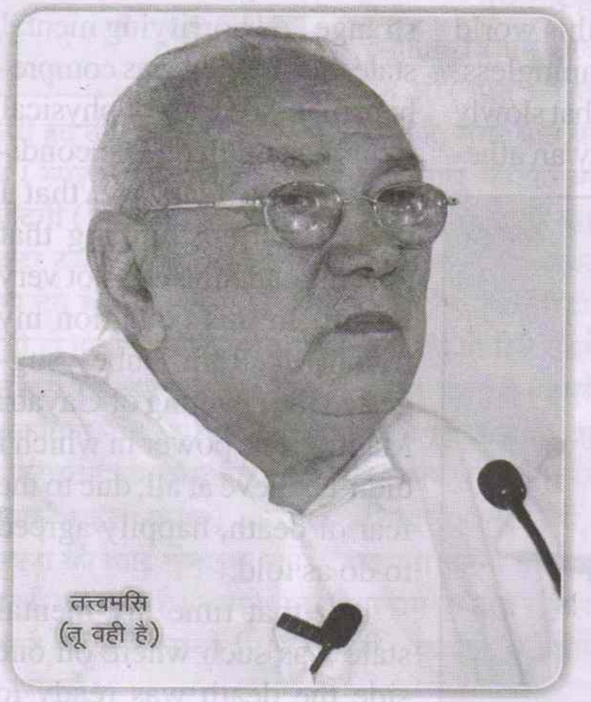

तत्त्वमसि
(तू वही है)

प्रश्नः- आप कहते हैं कि शक्तिपात दीक्षा से कुण्डलिनी जाग्रत करता हूँ। ये शक्तिपात दीक्षा क्या है? ये कुण्डलिनी जाग्रत होना क्या है?

उत्तरः- देखिए, कुण्डलिनी जो हैं, वह उस परमसत्ता का दिव्य प्रकाश है, सृष्टि उत्पति का आदि कारण है। जब तक ये जाग्रत होकर वापस सहस्रार में अपने मालिक के पास नहीं पहुँचती यानि शिव और शक्ति का मिलन नहीं होता, तब तक मोक्ष एक कल्पना है। इस सृष्टि उत्पति का कारण जो हैं, वापस सहस्रार में पहुँचकर लय हो जाता है तो साधक का द्वैत भाव खत्म हो जाता है। अब जब वो नीचे (मूलाधार में) है, तब एक ही शक्ति दो भागों में विभाजित है। वह एक अविभाज्य सत्ता है इसलिए ज्यों ही वो ऊपर खिचकती हुई सहस्रार में पहुँच जायेगी, जीव भाव खत्म हो जाएगा।

उदाहरण के लिए जिस तार से कनेक्शन ले रहे हैं, उसमें करंट है तो बत्ती जल जायेगी, यानि जिससे दीक्षा ले रहे हैं, वह उस परमतत्त्व से जुड़ा हुआ हो, उससे ओतप्रोत हो तब आप चेतन हो जायेंगे अन्यथा नहीं। आजकल मानवता में बदलाव नहीं आ रहा है, इसकी वजह है गुरु एनलाइटेंड नहीं है। समर्थ गुरु नहीं है। कोई कपड़ा रंग कर गुरु बन जाता है, कोई शरीर रंग कर। कपड़ा रंगने या शरीर से गुरु का कोई मतलब नहीं है।

प्रश्नः- आजकल अधिकतर गुरु भगवे वस्त्र में आते हैं, जबकि आप श्वेत वस्त्र में। भगवें कपड़े या श्वेत कपड़े का गुरु से क्या संबंध है?

उत्तरः-आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया है। परमसत्ता से जुड़ने के दो रास्ते हैं, एक निवृत्ति मार्ग-संसार के कामों से निवृत्त हो गया, कपड़ा रंग लिया है और बैठ गया है, अब फिर उसको किसी से ईर्ष्या, मोह, द्वेष, लालच आदि नहीं होना चाहिए क्योंकि संसार से निवृत्त हो चुका है। लेकिन ये दुश्मन (ईर्ष्या, मोह, लालच, द्वेष) संन्यासी को कहीं ना

www.the-comforter.org

कहीं पकड़ लेते हैं फिर भगवा ही रह जाता है बाकि नहीं रहता है। ये बहुत खतरनाक मार्ग है। इसमें पद्च्यूत (स्लिप) होने की 101 प्रतिशत संभावना है।

सवितादेव संदेश (मासिक)
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर द्वारा प्रकाशित

"विश्व शान्ति का जनक—वेदान्त दर्शन" —संत सियाग

Release from the bondage of all type of diseases and intoxication by Awkening KUNDALINI

दूसरा मार्ग है प्रवृत्ति मार्ग-कर्मों के प्रति मानव का प्रवृत्त रहना। जो कुछ वह कर रहा है उसके साथ एक अतिरिक्त कार्य नाम जप करता रहता है, इस आराधना में भोग और मोक्ष दोनों साथ चलते हैं।

प्रश्नः- गुरुजी, आप संसार भर में चुनौती से कह रहे हैं कि जो बीमारियाँ मेडिकल साइंस ठीक नहीं कर सकती है, वो शक्तिपात दीक्षा के बाद स्वतः ठीक हो रही है, सारे नशे बिना कष्ट के छूट रहे हैं, ये कैसे संभव है?

उत्तरः- देखिए, मेडिकल साइंस से नहीं हो रहा है, इसका कारण है मेडिकल साइंस अपूर्ण है। हमारे यहाँ तो नशा छूटता है इसका कारण है, साधक की वृत्ति का बदलना। तामसिक ग्रंथियों के निष्क्रिय होते ही नशा छूट जाता है। मेडिकल साइंस में डॉक्टर कैदी (बन्दी) की तरह रखकर, नशा छुड़वाते हैं। मादक पदार्थ में कोई ऐसी दवाई डाल देते हैं, जिससे जी मचलाने लगता है। इसमें दो ढाई महिने में नशा छोड़ देता है परन्तु इससे उसकी ग्रंथि निष्क्रिय नहीं होती है। अस्पताल के बाहर आकर महीने दो महीने में वापस उसी प्रकार नशा करने लगता है। हमारे दर्शन में नाम जप से जब कुण्डलिनी जाग्रत होती है तो इससे साधक की तामसिक वृत्ति निष्क्रिय हो जाती है। अंदर से माँग नहीं होती तो फिर कोई तकलीफ नहीं होती है। मेडिकल साइंस वाले अन्दर नहीं जा सकते, उनके पास ये ज्ञान नहीं है इसलिए नशा नहीं छुड़वा सकते ।

वृत्ति बदलने के कारण मनुष्य पूर्ण सात्विक हो जाता है। शक्तिपात दीक्षा से ज्योंहि कुण्डलिनी जाग्रत होती है तो पहले तमोगुण शांत होता है, फिर रजोगुण शांत होता है एवं सतोगुण अपने क्रमिक रूप से विकसित होता रहता है।

सतोगुण इतना प्रभावशाली हो जाता है कि दुबारा तमोगुण व रजोगुण को जीवन भर उभरने नहीं देता है। इस प्रकार बीमारी जड़ से समाप्त हो

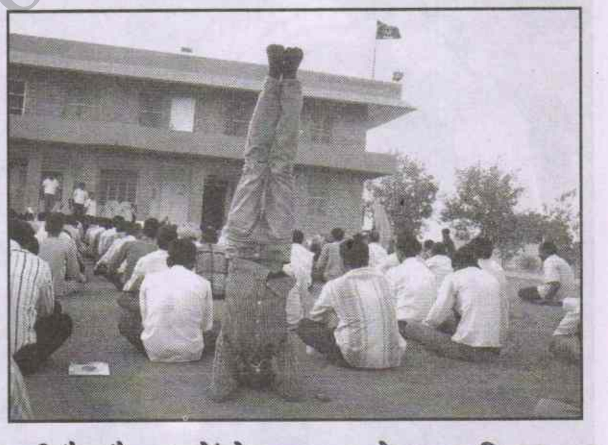

जाती है और नशों से साधक को आन्तरिक भाव से घृणा हो जाती है वो तत्त्व अंदर चेतन नहीं रहे जो अंदर बैठकर गन्दगी को खा रहे थे। इस प्रकार मनुष्य पूर्ण सात्विक हो जाता है।

भगवान् कृष्ण ने गीता के अध्याय पाँच में नाम खुमारी को अक्षय इन्द्रियातीत आनंद कहा है।

www.the-comforter.org

आज मानव भौतिक सुख को ही आनंद मान बैठा है। आनंद बदलता नहीं है। आज बच्चों को किसी में, जवान को किसी में व बूढ़ों को किसी और बात में आनंद आता है। यह तो सुख बदलता है, आनंद बदलता नहीं है। **जब तक व्यक्ति इस आनंद को अनुभूत नहीं कर लेगा, तब तक नहीं जान पाएगा कि आनंद क्या है और सुख क्या है?** अस्सी प्रतिशत बीमारियाँ मानसिक तनाव से होती है। नाम जप से ज्योंहि आनंद आने लगता है, मानसिक तनाव शांत हो जाता है। बाहर का योग प्रशिक्षक नहीं जानता कि साधक का कौनसा सिस्टम खराब है लेकिन मातृशक्ति कुण्डलिनी अच्छी तरह से जानती है। यह उसी सिस्टम को यौगिक क्रिया द्वारा रेगुलराइज(नियमित) करती है जो बीमार (खराब) है। लेकिन ये बाहर का प्रशिक्षक नहीं जानता कि कौनसा सिस्टम रेगुलराइज (ठीक) करना है?

समाधिस्थ होने की पहली शर्त है पूर्ण रोग मुक्ति। जब तक शारीकि रोगों से मुक्ति नहीं होगी, समाधि नहीं लगेगी। ये चेतन समाधि है, जड़ समाधि नहीं। समाधि के बिना परमसत्ता के दर्शन नहीं होंगे और इससे मोक्ष प्राप्ति नहीं होगी।

प्रश्नः- चेतन समाधि क्या है?

उत्तरः-चेतन समाधि यानि साँस ऊपर खींचकर लगाने वाली समाधि नहीं। इसमें साधक होश-हवास में रहता है, जब वह सच्चिदानन्द के लोक में पहुँच जाता है तब भी वह चेतन रहता है।

समाप्त

www.the-comforter.org

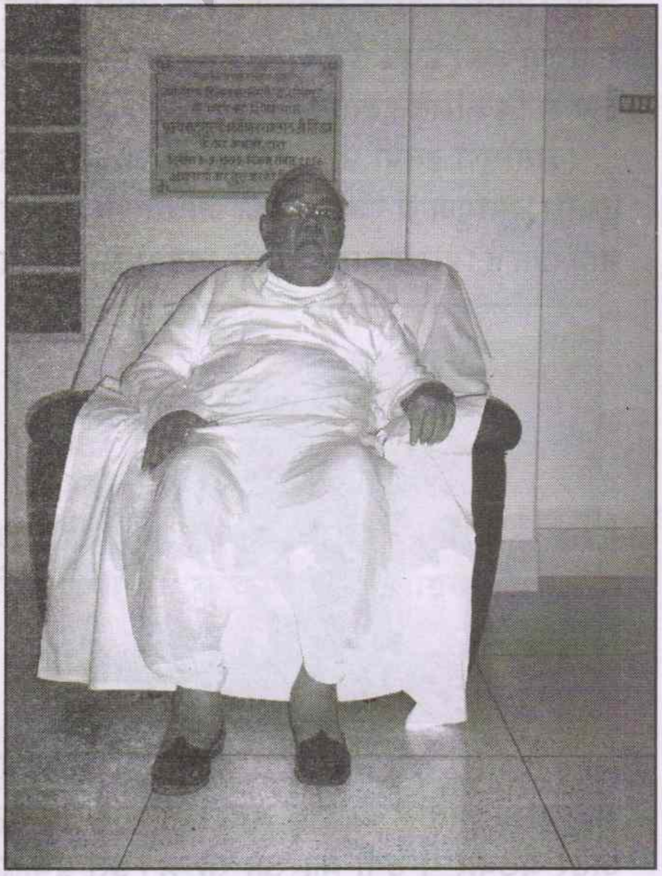

समाधि- परम्परा के अनुसार निर्विकल्प समाधि महज वह समाधि है जहाँ से मनुष्य गर्म लोहे से दागने या आग से जलाने पर भी नहीं जग सकता- अर्थात् ऐसी समाधि जिसमें मनुष्य पूर्ण रूप से शरीर से बाहर चला गया होता है। अधिक वैज्ञानिक भाषा में कहा जा सकता है कि यह वह समाधि है जिसमें चेतना के अंदर कोई रचना या गति नहीं होती और योगी एक ऐसी स्थिति में खो जाता है जहाँ से वह अनुभव का कोई विवरण नहीं ले आ सकता, महज यही कह सकता है कि वह आनंद में ऐसा था। ऐसा माना जाता है यह स्थिति सुषुप्ति या तुरीयावस्था में पूर्णतः लीन हो जाना है।

-श्रीमां

भूल-सुधार:- मई 2019 अंक के पेज नं.32 पर शीर्षक-'अवतार की संभावना और हेतु' के प्रथम पेरा में सिरजता(cremation, दाह संस्कार) की जगह सिरजता (creation, सृजन) पढ़ा जाये।

गुरुदेव की असीम कृपा से पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई

मैं सीमा पत्नी श्री सुरेश जी गहलोत निवासी मथानिया, जिला जोधपुर की रहने वाली हूँ। मैं अंतर्यामी समर्थ सद्गुरुदेव को बारम्बार नमन् करती हूँ, जिनकी असीम कृपा से मुझे पुंत्र रत्न की प्राप्ति हुई और आनंदमय जीवन जीने का पथ मिला।

हे, परम दयालु आप तो उतरा के गर्भ में पल रहे परीक्षित की रक्षा करने वाले साक्षात् नारायण हो।

मेरे जीवन में, मैंने जो कष्ट सहा तथा बाद में गुरु कृपा से जो परिवर्तन आया उसकी आप बीती लिख रही हूँ- मेरे गर्भ में बच्चा नहीं ठहरता था। मैंने कई जाँचें करवाई, दवाइयाँ ले ली लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। जब भी गर्भ में बच्चा ठहरता था, वो कुछ समय बाद गर्भपात हो जाता था। आखिर मैंने व मेरे पति ने गुरुदेव से करूण प्रार्थना की कि-**हे गुरुदेव ! हमने तो हमारे सारे प्रयास कर दिये, अब हम आपकी शरण में हैं, आप हम पर कृपा करो।**

उसके बाद फिर गर्भ ठहरा, गर्भ ठहरने के कुछ लक्षण दिखने पर, हमारे गाँव के हॉस्पीटल की नर्स को दिखाया तो उसने एक इन्जेक्शन दिया तथा कहा कि यदि भगवान् का लिखा होगा तो बच्चा बच जाएगा बाकि इस स्थिति में तो कोई सम्भावना नहीं है। फिर हम जोधपुर आ गये तथा स्त्री व प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. बिस्सा को दिखाया तो उसने सारी जाँचें करवाकर, गंभीर स्थिति को देखते हुए अस्पताल में भर्ती कर दिया और कहा कि भगवान् पर भरोसा रखो बाकि जो स्थिति बनी हुई है, उसके अनुसार बच्चे का बचना मुश्किल है।

मैंने गुरुदेव को याद किया, हे गुरुदेव ! मेरे बच्चे को बचा लेना। भर्ती होने के पंन्द्रह दिन तक अस्पताल में डॉ. बिस्सा नहीं आयी। सोलहवें दिन मैंने गुरुदेव से करूण प्रार्थना की तो मेरा ध्यान लग गया। ध्यान इतना गहरा लगा कि मुझे आकाश में गुरुदेव विमान में बैठे दर्शन दिये तो मैं भाव विभोर हो गई और डॉ. बिस्सा नीचे सड़क पर चलती हुई नजर आई। सत्रहवें दिन डॉ. बिस्सा आ गई। सभी ने कहा कि मैडम बीस दिन की छुट्टी पर थी, बीच में कैसे आ गई। और मेरे को देख कर बोली कि तेरे को छुट्टी नहीं मिलेगी, नौ महिने अस्पताल में ही रहना पड़ेगा, उसके बाद भी बच्चे को बचाना मुश्किल होगा।

मैंने उसी समय गुरुदेव से करूण प्रार्थना की तो डॉ. बिस्सा तुरन्त वापस आयी और कहने लगी बेटा तू घर जाना चाहती है तो हर पन्द्रह दिन बाद दिखाती रहना। मैं दवाई लेती रही और बराबर ध्यान करती रही। छठे महीने में डॉ. बिस्सा को दिखाने गई तो उन्होंने मुझे फिर से एडमिट कर दिया और कहा की गर्भ में पानी कि मात्रा ज्यादा है, बच्चे को किसी भी समय निकालना पड़ सकता है, मैंने और मेरे पति ने गुरुदेव से करूण प्रार्थना की और ध्यान करते रहे। सातवें महिने में जब वापस सोनोग्राफी करवाई तो पानी जहाँ था वहीं रहा एक बूँद भी नहीं बढ़ा।

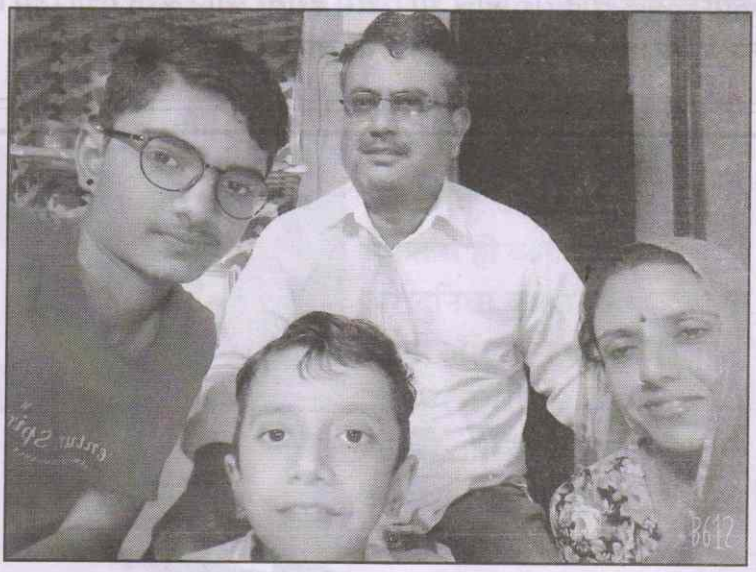

आठवें महिने में ऑपरेशन से पूर्व

जाँच में कहा गया कि हृदय की धड़कन तेज होने की वजह से ऑपरेशन रुक कर करना पड़ेगा। टी. एम. टी. जाँच करवाई तो गुरुदेव की कृपा से जाँच सामान्य आई। सात अक्टूबर को आश्रम में गुरुदेव का कार्यक्रम था, मेरे पति वहाँ गये, ध्यान से उठते ही उनको डॉ. साहब जो हमारे गुरु भाई है, उन्होंने आकर कहा मास्टर जी आपके लड़का होगा और 9 अक्टूम्बर को गुरुदेव की कृपा से लड़का हो गया।

मैं और मेरे पति बार-बार गुरुदेव को याद कर रहे थे। अस्पताल से छुट्टी देने से पूर्व डाक्टरों ने कहा कि गर्भ में पानी ज्यादा होने से बच्चा बहरा हो सकता है तो उसकी बहरेपन की जाँच के लिए भेजा गया। हमने गुरुदेव को याद किया, उसके बाद वह जाँच भी सामान्य आयी। छठे महीने में रंगीन सोनोग्राफी देखकर डॉक्टर साहब ने कहा था कि बच्चे के कोई अंग में खराबी हो सकती है जैसे- तालु में छीद्र, नाक कटा हुआ, आँख आदि में खराबी, लेकिन गुरुदेव की कृपा से ऐसा कुछ नहीं हुआ।

पूजनीय गुरुदेव जब प्रथम बार अमेरिका प्रवास पर गये थे। इसी दौरान मेरे पतिदेव के दोनों गुर्दों में क्रमशः 6 मी.मी तथा 5 मी.मी की पथरी थी तथा मूत्र नली में 6 मी.मी. की पथरी थी। सोनोग्राफी के बाद डॉक्टर से परामर्श करने पर ऑपरेशन की सलाह दी गई। मेरे पतिदेव सीधे जोधपुर आश्रम चले गये। उन्होंने वहाँ पर एक गुरुभाई से बातचीत की तो उन्हें बताया कि अपने-आप निकल जायेगी, आप तो बस बराबर ध्यान करते रहिए। उस दिन के बाद, एक दिन उन्हें भंयकर दर्द हुआ। वे बराबर मंत्र जाप करते रहे। फिर कभी दर्द नहीं हुआ और दो महीने बाद सोनोग्राफी करवाई तो कोई पथरी नहीं थी।

इस प्रकार मेरे पतिदेव को पथरी के दर्द से पूज्य सद्‌गुरुदेव भगवान् ने मुक्ति दिला दी।

सद्‌गुरुदेव के प्रति अनन्य भक्ति और श्रद्धा ने विज्ञान को चुनौती दे दी। यह सब गुरुदेव सियाग सिद्धयोग का कमाल है। जब सब तरह से व्यक्ति हार जाता है तो कलियुग में केवल सद्‌गुरुदेव भगवान् का ही सहारा होता है। ऐसे परम सद्‌गुरुदेव के पावन चरण कमलों में बारंबार नमन् और वन्दन।

-श्रीमती सीमा
पत्नी श्री सुरेश गहलोत
आर्दश नगर, मथानिया
(जोधपुर)

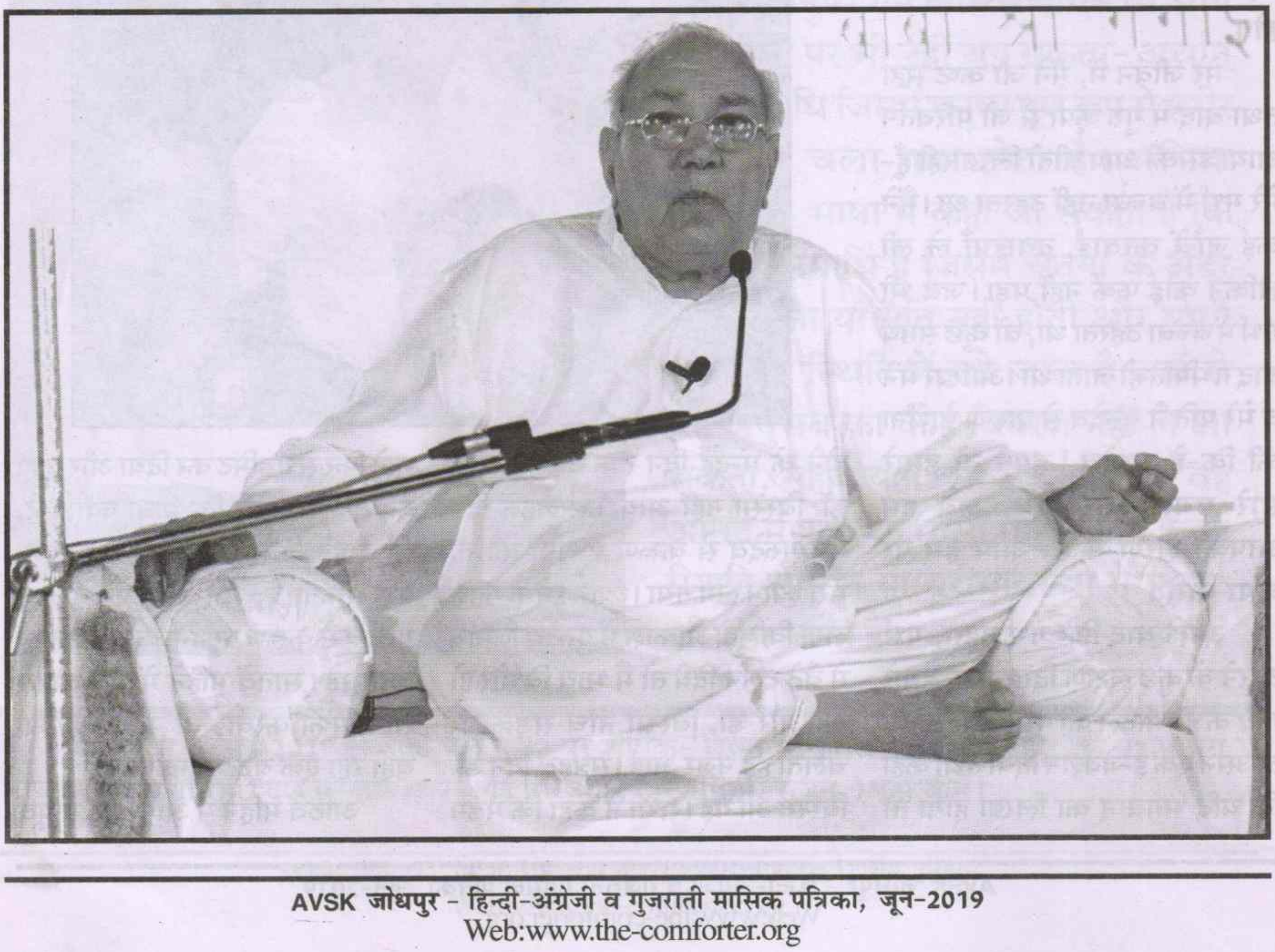

www.the-comforter.org

हमारा समर्पण

हे समर्थ सद्गुरुदेव , बलवन्त की ये है कामना।
हर घड़ी हर पल मुझे, तुझे ही है थामना।।

मालिक के मिलन जैसी,
कोई मुलाकात नहीं है।
चन्द्र ग्रहण अमावस्या जैसी,
कोई काली रात नहीं।
मानो या ना मानो जमाने वालों,
एक तस्वीर से ध्यान लग जाये,
ये कोई मामुली बात नहीं है।
खुदा से बंदे, सौ माँग हजार देगा।
एक बार नहीं वो बार बार देगा।
अगर चाहता है अधिक,
तो मेरे गुरुदेव की शरण चल,
वो चन्द लम्हों में तुझे,
इस भव सागर से तार देगा।
हे समर्थ सद्गुरुदेव ,
बलवन्त की ये है कामना।
हर घड़ी हर पल मुझे,
तुझे ही है थामना।।
मुझे नहीं चाह किसी चीज की,
बस इतनी सी मुराद पूरी कर दे,
मुझे हर जन्म गुरुदेव,
तेरे चरणों की धूल बना दे।।
बड़ी खुशनसीब है,
राजस्थान की सूर्यनगरी,
जहाँ स्वयं कल्कि अवतार रहने को आये।
आप आये सो आये,
सारे जहाँ को भी खींच लाये।
तेरी कलम जितना लिखे उतना ही कम है,
गुरुदेव तो मेरे सारे ब्रह्माण्ड में समाये हैं।
जो भी आया, खाली नहीं गया।
साथ आया दुःख,कभी साथ नहीं गया।
बिन माँगे झोली भर देते हैं,

एक तस्वीर से ध्यान लग जाये, ये कोई मामुली बात नहीं है !

ऐसे हैं मेरे परम दयालु गुरुदेव।
हाथ उठाया जब भी कभी,
तो कोई बिना आशीर्वाद नहीं गया।
शांति दूत कहूँ या,
कहूँ तुझे कल्कि अवतार तुझे।
फंस गया हूँ इस भंवर में,
इस भव से तार मुझे।।
सुना है मैंने खाली हाथ,
नहीं जाने देता तू,
तो है परम दयालु समर्थ सद्गुरुदेव,
मेरी छोटी सी चाह है।
अपने चरणों की धूल बनाना,
हर जन्म में हर बार मुझे।
इक सफेद पोशाक धारी,
अमृत घर घर बाँट रहा है।
नशे, रोग, अंधविश्वास को,
मुफ्त में ही काट रहा है।
अरे दुनिया वालों,
खुली आँखों से भगवान् देखो,
जो सूर्य नगरी में,
अपनी तपस्या ताप रहा है।
ध्यान का रस हम भी पीने आये हैं,
तेरे श्री चरणों में
हम भी झुकने आये हैं।
हे अन्तर्यामी !
मुख से बोल कर हाल क्या सुनाऊँ ?
तू घट घट का है, निराला नवभाऊ।
हे समर्थ सद्गुरुदेव ,
बलवन्त की ये है कामना।
हर घड़ी हर पल मुझे,
तुझे ही है थामना।।

पथरी से निजात

सर्वप्रथम में सद्‌गुरुदेव के चरणों में बारम्बार प्रणाम करता हूँ।

मैं जब्बर सिंह ग्राम देचू का रहने वाला हूँ। मैं आर्मी में नौकरी करता हूँ। जब भी मैं दौड़ता था, तब मेरी छाती में दर्द होता था और पथरी की समस्या थी। मैं काफी चिंतित रहने लगा, मैंने पथरी का ऑपरेशन भी करवाया लेकिन वह समस्या ठीक नहीं हुई।

11 जुलाई 2009 को मैंने गुरुदेव से बालेसर आश्रम में दीक्षा ली लेकिन मेरा ध्यान नहीं लगता था, चिंता बढ़ने लगी कि छाती का दर्द और यह पथरी की बीमारी कैसे ठीक होगी? पहले ही पथरी के दो ऑपरेशन हो चुके हैं, तब मेरे सालाजी श्री जयसिंह ने कहा कि आप निरन्तर नाम जप और ध्यान करते रहो, आपका ध्यान लगेगा। लेकिन मैं आर्मी में सर्विस करता हूँ, मुझे समय निकालना मुश्किल था फिर भी मैं कोशिश करता रहता था।

जुलाई 2010 में मुझे पथरी की समस्या दुबारा शुरू हो गई। मुझे दिल्ली के आर्मी अस्पताल में भर्ती कर दिया गया। वहाँ कई साधक सुबह-शाम गुरुदेव का ध्यान करते थे और कई साधकों को यौगिक क्रियाएँ बड़ी तीव्र गति से होती थी। मैंने उनको बताया कि मेरा ध्यान नहीं लगता है, एक गुरुभाई ने बताया कि आप मेरे साथ चलो आज आपका ध्यान जरूर लगेगा।

दो-तीन दिन तक मैं उनके साथ गया। गुरुवार के दिन उन्होंने बताया कि आपका ध्यान जरूर लगेगा, उस दिन मेरा ध्यान लग गया और मेरा शरीर इधर-उधर हिलना-डुलना शुरू हुआ व इतना जोर-जोर से हिलना शुरू हुआ कि मैं स्वयं नियंत्रित नहीं कर सका। मेरा ध्यान खुला तो जिस जगह पर मैंने ध्यान शुरू किया था, उस जगह से मैं दो मीटर दूर था तब मैंने सोचा कि मैंने ध्यान तो यहाँ शुरू किया वहाँ कैसे पहुँच गया?

उसके बाद मैं लगातार ध्यान लगाता हूँ। योग होता है जिससे मेरे छाती का दर्द बिलकुल ठीक हो गया है। और पथरी का दर्द भी गायब हो गया और डॉक्टर ने मुझे अस्पताल से छुट्टी दे दी तो बहुत खुश हुआ। अब मैं आर्मी में निरन्तर ध्यान करता हूँ, अब मुझे कोई समस्या नहीं है।

मैं सबसे यह कहना चाहता हूँ कि इस महाप्रसाद से मत चुकना नहीं तो पीछे रह जाओगे, फिर पछताना ही रह जाएगा। कहते हैं-

दुख में सुमिरन सब करे,
सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे
तो दुख काहे को होय।।

तो आप यह मत सोचो कि मुझे तो कोई बीमारी नहीं है किसलिए वहाँ जाऊँ इस शरीर का कोई पता नहीं, कभी भी आपको कुछ भी हो सकता है। सद्‌गुरुदेव की कृपा दृष्टि को प्राप्त कर ली, आपका जीवन धन्य हो जाएगा। आराधना के संबंध में एक ही मुख्य बात है कि आप जितना सघन नाम जप करोगे उतना ही आपका गहरा ध्यान लगेगा तथा सारी समस्याओं से पीछा छूट जाएगा। इसलिए गुरुदेव को मैं भगवान् मानता हूँ और ये ही भगवान् है, इसमें कोई शक नहीं, अगर शक है तो ध्यान करके देखो तभी पता चलेगा।

-जब्बर सिंह
ग्राम-देचू, जोधपुर

ध्यान के समय नींद-जब कोई ध्यान करने की कोशिश करता है तब भीतर पैठने के लिये, बाहरी चेतना खो देने के लिये तथा अंदर में, आंतरिक चेतना की गहराई में जाग्रत होने का दबाव पड़ता है। परंतु आरंभ में मन ऐसा समझता है कि यह दबाव निद्रा में डूबने के लिए है, क्योंकि निद्रा ही एकमात्र आंतरिक चेतना की वह स्थिति है जिसका उसे अभी तक अभ्यास रहा है।

इसलिए योग में ध्यान करने पर आरंभ में जो बहुधा कठिनाई होती है, वह है नींद। परंतु कोई यदि लगातार प्रयास करता रहे तो धीरे-धीरे एक सचेतन स्थिति में बदल जाती है।

-श्री अरविन्द आश्रम की श्रीमां

कहानी

चुनाव अपने विवेक पर
–भगवान् का या भीड़ का ?

कौरव और पाण्डवों के बीच महाभारत का युद्ध सुनिश्चित हो गया था। दोनों पक्ष अपने अपने शुभ-चिन्तकों, सहयोगियों और सम्बन्धियों से मदद के लिए दौड़-धूप कर रहे थे। सभी जानते थे कि श्री कृष्णा पाण्डवों के पक्ष में रहेंगे। यही कौरवों के भयभीत रहने का प्रमुख कारण था। श्री कृष्ण के सम्मुख धरती का कौन योद्धा खड़ा होने का साहस रख सकता है। श्रीकृष्ण और पाण्डवों के सम्बन्ध को जानते हुए भी कौरवों को शकुनि ने सलाह दी कि श्रीकृष्ण से हर संभव सहयोग लेने की प्राणप्रण से चेष्टा करें। इसी उद्देश्य से स्वयं दुर्योधन द्वारकाधीश को निमन्त्रण देने द्वारिका पहुँचे।

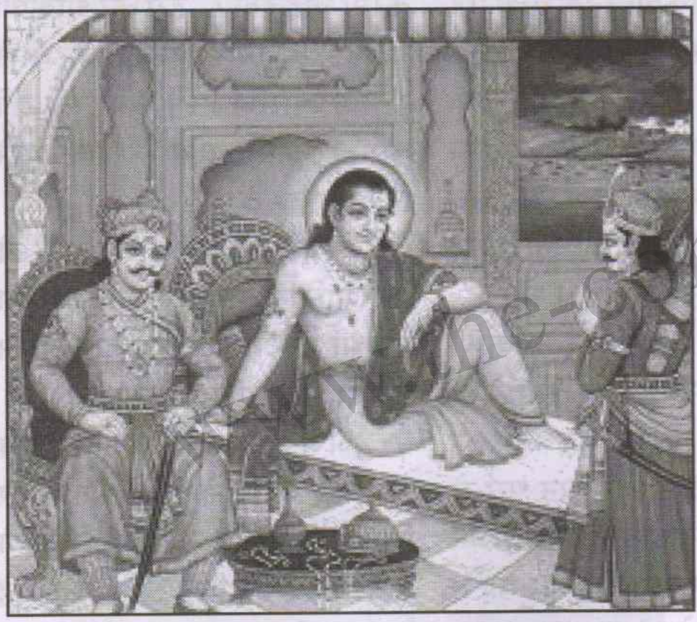

दुर्योधन का श्रीकृष्ण से पारिवारिक रिश्ता था, इसीलिए श्रीकृष्ण के भवन में प्रवेश लेने में उन्हें कोई खास परेशानी नहीं उठानी पड़ी। जब वहाँ पहुँचा तो मालूम हुआ कि वासुदेव, भोजन करके विश्राम कर रहे थे। दुर्योधन सीधे उनके कमरे में चले गये। भगवान् श्रीकृष्ण पल-पल की खबर रखने वाले नेत्र बंद किये, यद्यपि लेटे थे लेकिन उन्हें मालूम था कि दुर्योधन उनके पास आ चुके हैं। दुर्योधन ने क्षणभर तो खड़े होकर सोते हुए श्रीकृष्ण पर दृष्टि डाली, फिर सिरहाने रखे एक आसन पर बैठ कर उनके उठने की प्रतीक्षा करने लगे।

उधर अर्जुन भी श्रीकृष्ण से सहायता लेने द्वारिका पहुँचे और सीधे उनके शयन कक्ष में गये। उन्होंने देखा कि श्यामसुन्दर नींद में हैं इसलिए चरणों के पास खड़े हो गये और अपलक उनके रूप को निहारने लगे।

इस बीच श्रीकृष्ण जाग उठे, उन्होंने सबसे पहले अर्जुन को देखा, देखते ही पूछा, ''धनंजय, कब और कैसे आये ?''

दुर्योधन ने सोचा कि कहीं अर्जुन को सहयोग देने का वचन दे दिया तब तो सब काम बिगड़ जाएगा। यह विचार आते ही वे बैठे-बैठे बोले – ''वासुदेव ! मैं पहले से आकर बैठा हूँ, अर्जुन तो अभी पहुँच रहा है।''

''अरे आप ! श्रीकृष्ण ने आधी गर्दन घुमाकर आश्चर्य से देखा और पूछा – ''आप कैसे पधारे ?''

दुर्योधन बोले – ''आप जानते ही हैं कि अब पाण्डवों से युद्ध सुनिश्चित है, आप भी मेरे एक सम्बन्धी हैं, अतएव आप युद्ध में मेरी सहायता करें।''

''अर्जुन ! तुम बोलो ?'' भगवान् ने उनकी आँखों में आँखें मिला कर पूछा।

''इसी उद्देश्य से मैं भी आपके पास आया हूँ।''

एकक्षण तक भगवान् श्रीकृष्ण चुप रहे फिर बड़ी गम्भीरता पूर्वक बोले –

''आप दोनों ही मेरे सम्बन्धी हैं। मैं इस पारिवारिक युद्ध में दोनों पक्षों में किसी का भी साथ देना अच्छा

नहीं समझता। इसी कारण मैंने शस्त्र भी न ग्रहण करने का निर्णय लिया है। एक ओर शस्त्रहीन रहूँगा और दूसरी ओर शस्त्रों से सुसज्जित मेरी सेना रहेगी। परन्तु मैं एक बात साफ कह देना चाहता हूँ कि मैंने सर्वप्रथम अर्जुन को देखा है, फिर वह आपसे छोटे भी हैं उम्र में, अतः अर्जुन को पहले अवसर मिलना चाहिए कि वह दोनों प्रस्ताव में से अपने लिए जो चाहे चुन ले।''

उधर अर्जुन और दुर्योधन की मनःस्थिति विचित्र हो रही थी, लेकिन भगवान् के इस प्रस्ताव को सुनते ही अर्जुन का अन्तर मन प्रफुल्लित हो उठा, उन्हें तो जैसे वरदान ही मिल गया और कहीं दुर्योधन पहले वासुदेव को माँग लेता तब तो सारा खेल ही चौपट हो जाता। *यह सोचकर अर्जुन ने तपाक से कहा* – 'मैं आपको अपने पक्ष में चाहता हूँ।'

अर्जुन का निर्णय सुनकर

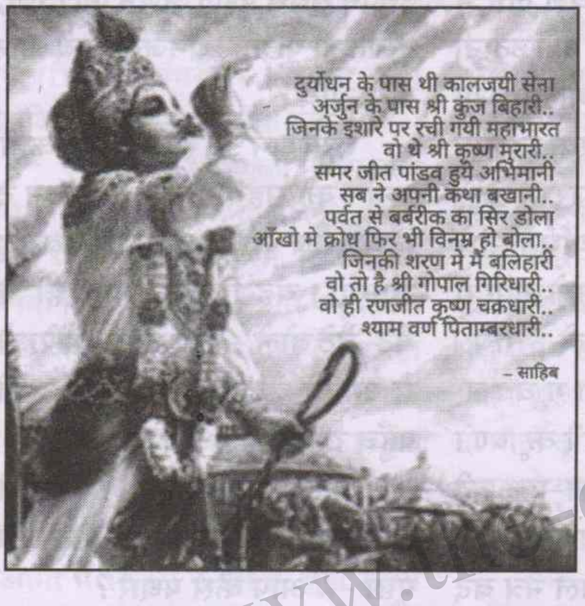

दुर्योधन मन ही मन प्रसन्न हुये और बड़े उत्साह से खड़े हो गये फिर बोले –''बिल्कुल ठीक है हमें यह स्वीकार है कि आप पाण्डवों के पक्ष में रहें और नारायणी सेना हमारी सहायता करेगी। दुर्योधन ने सोचा कि द्वारकेश जब शस्त्र ग्रहण नहीं करेंगे तो युद्ध में लेकर क्या फायदा। वह मन ही मन भयभीत भी था कि कहीं अर्जुन सेना की माँग न करलें, अन्यथा श्रीकृष्ण उनके मत्थे पड़ जाते।''

अर्जुन अपनी जीत में प्रसन्न थे तो दुर्योधन अपनी जीत में। भगवान् श्रीकृष्ण की लीला से दोनों अनभिज्ञ थे।

भगवान् श्रीकृष्ण ने दुर्योधन के सामने ही सेना को उनके पक्ष से युद्ध करने का आदेश भेज दिया। दुर्योधन गर्व से फूले, प्रसन्नचित चले गए, तब अर्जुन को देखकर भगवान् हंसे और बोले, ''अर्जुन! तुमने कैसा बचपने का काम किया? तुम्हें सेना माँगनी चाहिए, इसलिए तो मैंने तुम्हें पहले अवसर दिया था। मुझ अकेले से तुम्हारा क्या हित होगा? उस दशा में, जब मैं शस्त्र न उठाने का वचन दे चुका हूँ। अभी भी समय है यदि तुम चाहो तो यादव शूरों की एक अक्षौहिणी सेना ले सकते हो?

अर्जुन की दृष्टि वासुदेव पर टिकी थी। उनके नेत्रों के कोर में आँसू भर आये थे, वे भरे कंठ से बोले ''आप जानते हुये भी मेरी परीक्षा क्यों ले रहे हैं? मैंने किसी हित-अहित की बात नहीं सोची। पाण्डवों की विजय हो अथवा पराजय, यह महत्वपूर्ण नहीं है। आप तो हमारे प्राण हैं, आपके बिना हमारा अस्तित्व नहीं है। आपसे रहित आपका बल हमें नहीं चाहिए। हम तो आपके हैं, आपको छोड़कर कहीं नहीं जा सकते।''

आखिर तुम मेरा कैसा उपयोग करना चाहते हो?'' हंस कर श्रीकृष्ण ने पूछा? अर्जुन भी मुस्करा कर बोले ''आप सारथि होंगे, मेरे रथ की बागडोर अपने हाथ में लेकर मुझे निश्चिंत कर दें।''

अर्जुन का यह उत्तर सुनते ही करूणानिधि भगवान् श्रीकृष्ण का मन भी भर आया और उन्होंने अर्जुन को बाहुपाश में भर लिया।

अर्जुन जानते थे कि जब भगवान् ही सारथी होंगे तो फिर चिन्ता ही नहीं रह जाती। श्रीकृष्ण भगवान् के प्रति अर्जुन का यह **'आत्म विश्वास'** एक विलक्षण उदाहरण है और यह सर्व समर्पण का प्रतीक है।

इसलिए तो एक बार किसी साँक के माँगने पर गुरुदेव ने कहा कि **''मेरे से माँगना है तो करुणा माँग लो, सब कुछ अपने आप मिल जाएगा।''**

❖❖❖

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर,
इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

चन्दौली (उ.प्र.) गुरुदेव सियाग सिद्धयोग शिविर का आयोजन – काली मन्दिर, पारसी टीरो, जिला–चन्दौली (उ.प्र.) में किया गया। कार्यक्रम में आये सैंकड़ों लोगों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर संस्था से प्रकाशित साहित्यिक सामग्री का वितरण किया गया। (10 मई 2019)

अश्विनी अस्पताल मुम्बई में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा मुम्बई द्वारा सिद्धयोग ध्यान शिविर का आयोजन। (प्रत्येक रविवार)

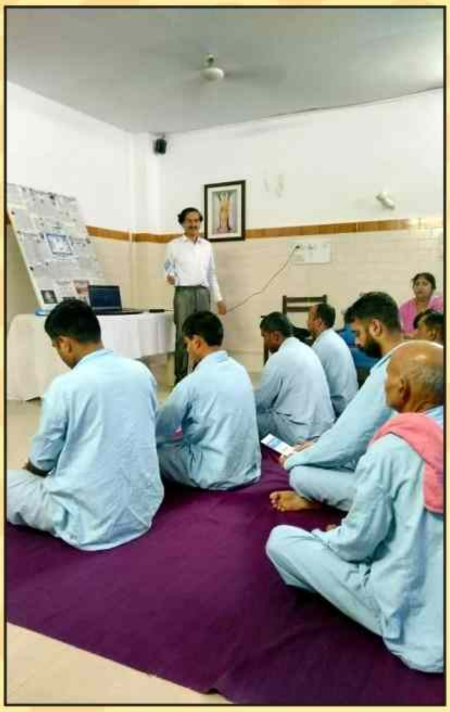

शिमोगा (कर्नाटक) – शैक्षणिक संस्थाओं में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन कर संजीवनी मंत्र के साथ 15 मिनट ध्यान कराया गया। (अप्रेल–मई 2019)

शिमोगा (कर्नाटक) – जैन समाज के जिज्ञासुजनों व विद्यालयों में सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर 15 मिनट ध्यान कराया गया। (अप्रेल–मई 2019)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा कोटा द्वारा लेण्डमार्क सिटी में सिद्धयोग दर्शन का प्रचार–प्रसार। (19 मई 2019)

www.the-comforter.org

भटिण्डा (पंजाब) में सिद्धयोग शिविर का आयोजन (12 मई 2019)

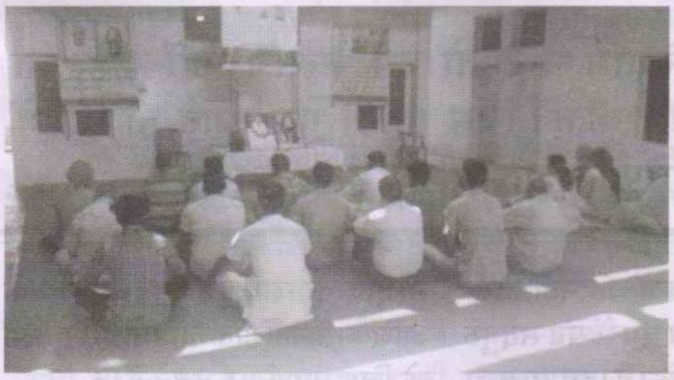
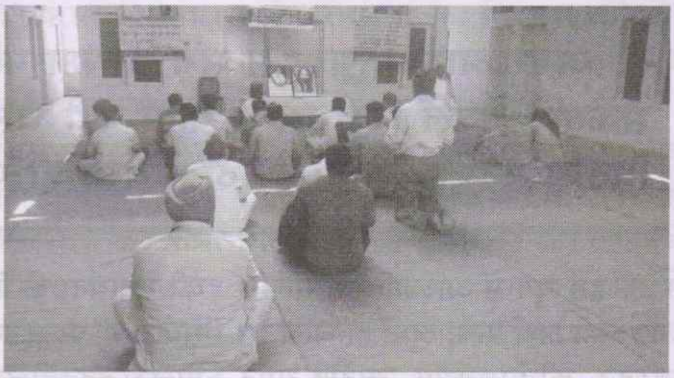

राजकीय उच्च प्रा. विद्यालय, कंवरजी की खेजड़ी, तापू (औसियां) जोधपुर में सिद्धयोग शिविर का आयोजन (4 मई 2019)

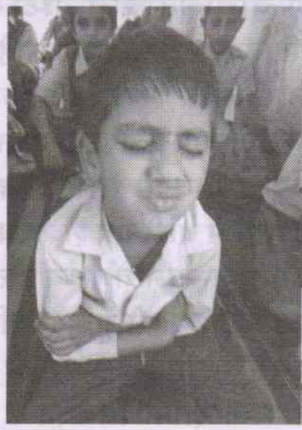

www.the-comforter.org

आध्यात्मिक सत्संग ?

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

अगर आध्यात्मिक सत्संग प्रत्यक्ष परिणाम न दे तो उसे सत्संग नहीं कहा जा सकता। केवल विश्वास से काम नहीं चल सकता। जिस प्रकार गुड़ खाते ही मुँह में मिठास पैदा हो जाता है, ठीक वैसा ही परिणाम सत्संग का होना चाहिए।

इस युग में आध्यात्मिक सत्संग का सही अर्थ प्रायः लुप्त हो चला है। भजन, कीर्तन, कथा, उपदेश आदि सत्संग के कई प्रकार, इस समय संसार में प्रचलित हैं। **सत्संग का सीधा साधा अर्थ है, सत्य का साथ करना।** केवल ईश्वर ही सत्य है बाकी दृश्य जगत् सारा नाशवान है। अतः जिसके संग के कारण उस परमतत्त्व परब्रह्म परमात्मा, सच्चिदानन्दघन की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार हो जाय, **वही सच्चा सत्संग है।** इस समय संसार से ईश्वर तत्त्व प्रायः पूर्ण रूप से लोप हो गया है।

इस समय उस तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति मात्र कल्पना का विषय रह गया है। उस परमतत्त्व के लोप होने के सम्बन्ध में समर्थ गुरु स्वामी रामदास जी महाराज कहते हैं:-

''तिन्ही लोक जेथून
निर्माण जाले।
तया देवरायासि कोणी न बोले।
जगी थोरलादेव तो चोरलासें
गुरुवीण तो सर्वथाही न
दीप्ते।।''

''तीनों लोक-भूलोक, द्युलोक, पाताल लोक जहाँ से उत्पन्न हुए उस सर्वश्रेष्ठ परब्रह्म देवाधिदेव श्रीराम को कोई नहीं कहता। जग में, सर्वोत्तम देव चुराया गया है। उसके चोरी हो जाने के बाद, वह दिखाई नहीं दे रहा है।

उस सर्व देवाधिदेव की चोरी की तो गई है किन्तु सदगुरुरूपी गुप्तचर की सहायता के बिना वह नहीं दिख सकेगा।'' परन्तु इस युग में संत सद्गुरु मिलना बहुत ही कठिन है। इस सम्बन्ध में समर्थ गुरुदेव कहते हैं :-

गुरु पाहतां पाहतां लक्ष

कोटी।
बहुसाल मंत्रावली शक्ति मोठी।
मनी कामना चेटके धातमाता।
जनीव्यर्थ रे तो नव्हे मुक्ति दाता।।

''गुरुओं को देखते-देखते तो लाखों-करोड़ो गुरु मिलेंगे। वे बहुत वर्षों तक मंत्र द्वारा चतुराई से अपने भीतर जादूगरी की बड़ी शक्ति द्वारा कामना-पूर्ति कर लोगों को अपने चंगुल में चिन्तामणि सदृश अपनी मन्त्र शक्ति के प्रभाव से ही फँसाते फिरते हैं।

ऐसे लोग व्यर्थ होते हैं। वे मोक्षदाता-सद्गुरु पद पाने के अधिकारी नहीं होते''। आगे ऐसे गुरुओं के लिए समर्थ गुरु कहते हैं। :-

''नव्हे चेटकी चालकू द्रव्यभोंदू।
नव्हे निंदकू मत्सरू भक्ति मंदु।
नव्हे उन्मतू वेसनी संगबाधू।
जगी ज्ञानियो तोचि साधु
अगाधू।।

जो जादू करने वाला होता है, लोगों के सम्मुख दीनता दिखाकर आह्लाद उत्पन्न करनेवाला या मिथ्या प्रशंसा करनेवाला होता है। तथा अपने साधुत्व का प्रदर्शन कर लोगों से पैसा लूटनेवाला द्रव्यलोभी होता है, वह सद्गुरु पद का अधिकारी नहीं होता।''

''वह किसी की निन्दा नहीं करता किसी से मत्सर्य नहीं रखता, उन्मत्त नहीं होता, व्यसनी नहीं होता तथा बुरी संगति में नहीं रहता जो बुरी संगतियों में बाधा डालनेवाला ज्ञान सम्पन्न होता है, वही अगाधज्ञानी व्यक्ति साधु है। ऐसा जानना चाहिए।

नव्हे वाडगी चाहुटी काम पोटी।
क्रियेवीण वाचालत तेचि मोटी।।
मुखे बोलिल्यासारिखें चालताहे।
मना सद्गुरु तोचि शोधूनि पाहे।।

वह व्यक्ति चुगलखोर नहीं होता। उसके अन्तरंग में काम भावना नहीं होती। वह मुख से बोले गये शब्दों का वैसा ही आचरण करने में सभ्य होता है। हे मन इन लक्षणों से युक्त व्यक्ति को ही सद्गुरु समझना चाहिए।

जनीं भक्त ज्ञानी विवेकी

www.the-comforter.org

विरागी।
कृपालू मनस्वी क्षमावंत योगी।
प्रभूदक्ष व्युत्पन्न चातुर्य जाणे।
त्याचेनि योगे समाधान बाणे।।

वह सद्गुरु पद का अधिकारी भक्त होता है और विवेक वैराग्य सम्पन्न, कृपालू मनस्वी क्षमाशील, योगी, समर्थ, अत्यन्त सावधान, व्युत्पन्न (प्रत्युत्पन्नमतिवाला) चातुर्यसम्पन्न तथा संगति करने पर समाधान की प्राप्ति कराकर समाधानी बनाने वाला होता है।

नव्हें तेंचि जाले नसे तेंचि आल।
कलों लागले सज्जनाचेनि बोल।।
अनिर्वाच्य ते वाच्य वाचे वदावें।
मना संत आनंत शोधीत जावें।

जो पहले नहीं था, वह हो गया - स्वरूप का बोध पहले नहीं था, वह हो गया। जो नहीं आता था, वह समाधान आ गया। ब्रह्मज्ञान से पूर्ण स्वरूपानन्द का भोग करने से समाधान चित्त में वास करने लगता है। गहन वेदान्त वाक्यों का बोध जो स्वरूप का संकेत दिया करता था, वह पहले नहीं समझता था। वह बोध महावाक्य (तत्त्वमसि) आदि का अर्थ सद्गुरुदेव के कृपा वचनों से सहज ही आत्मसात् हो जाने से समझ में आने लगा।

जो ब्रह्म निर्गुण निराकार और वाणी से परे अनिर्वचनीय था, वही वाणी से कहने योग्य और वाच्य हो गया। यह सद्गुरुदेव की कृपा है कि वही ब्रह्म अब मेरे कथन का विषय हो गया है। हे मन! ''नित्य अनन्त ब्रह्म को सत्संगति में रहकर खोजते रहो।''

उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि ऐसे संत सद्गुरु की सत्संग को ही सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक सत्संग कहा जा सकता है।

अगर आध्यात्मिक सत्संग प्रत्यक्ष परिणाम न दे तो उसे सत्संग नहीं कहा जा सकता। केवल विश्वास से काम नहीं चल सकता। जिस प्रकार गुड़ खाते ही मुँह में मिठास पैदा हो जाता है, ठीक वैसा ही परिणाम सत्संग का होना चाहिए। इसके विपरीत सभी कर्मकाण्ड और प्रदर्शन हैं। समर्थ गुरु स्वामी रामदास जी महाराज ने जो संत सद्गुरुदेव की पहचान बताई है, वैसा ही गुरु, 'सत्संग' के योग्य होता है।

दूसरे शब्दों में **यह सारा संसार एक ही परमसत्ता का विस्तार मात्र है।** संत सद्गुरुदेव निराकार ब्रह्म का सगुण साकार स्वरूप ही होता है।

अतः संत सद्गुरुदेव द्वारा प्राप्त प्रकाशप्रद शब्द की धार के सहारे उस दिव्य प्रकाश के आनन्द और रोशनी में उस पथ पर चलना सम्भव है, जहाँ से आदि में वह प्रकाशप्रद शब्द प्रकट होता है। उसी को **अलख लोक** के ऊपर वाला, अगम लोक संतों ने बारम्बार कह कर वर्णन किया है। उस लोक में

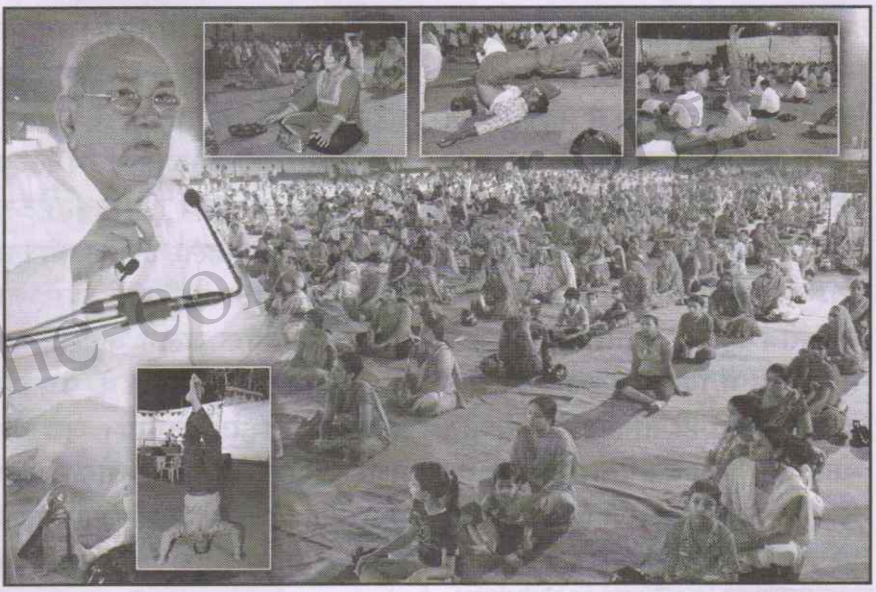

संसार के प्रायः सभी धर्म संसार के सर्वभूतों (जड़ और चेतन) की उत्पत्ति शब्द से मानते हैं। सभी धर्म कहते हैं कि वह शब्द **'प्रकाशप्रद'** है। सर्व प्रथम शब्द और प्रकाश से ज्ञान की उत्पत्ति होती है, फिर संपूर्ण ब्रह्माण्ड और त्रिगुणमयी माया की उत्पत्ति होती है। फिर त्रिगुणमयीमाया अपने जनक **'शब्द'** और **'प्रकाश'** (प्रकाशप्रद शब्द) की प्रेरणा से संसार के सर्वभूतों की रचना करती है। संसार का यह सारा प्रपंच उसी प्रकाशप्रद शब्द की देन है।

जाते ही जीवात्मा अपने जनक परमात्मा में पूर्ण रूप से लीन हो जाता है। इसी का नाम 'मोक्ष' है। प्रकाशप्रद शब्द के दिव्य प्रकाश से मनुष्य को अपने अन्दर उस दिव्य आनन्द की प्रत्यक्षानुभूति होने लगती है। बिना उस आनन्द की प्राप्ति के मनुष्य को मोक्ष का अर्थ ही समझ में नहीं आ सकता।

जब तक संत सद्गुरुदेव की कृपा से उस दिव्य आन्तरिक आनन्द का स्वाद मनुष्य चख नहीं लेता, उसे माया के प्रभाव से बाहरी भौतिक सुख ही

प्रभावित करते रहते हैं। वह बारम्बार यही कहता है कि क्या जरूरत है मोक्ष की? संसार के इस आनन्द को छोड़ कर मोक्ष का प्रयास मूर्खता है। क्योंकि उसने उस दिव्य आन्तरिक आनन्द का स्वाद चखा ही नहीं है। इस लिए वह सांसारिक सुखों में और दिव्य आन्तरिक आनन्द में भेद समझ ही नहीं सकता है। यह सारा प्रपंच केवल उपदेश, प्रदर्शन शब्दजाल और दर्शन शास्त्र के ग्रन्थों आदि से समझ में नहीं आ सकता।

ये सब मनुष्य को बुद्धि की कसरत मात्र करवा कर ज्ञानी बनने का भ्रम ही पैदा कर सकते हैं। इस समय संसार में यही भ्रम खुला बिक रहा है। अध्यात्म ज्ञान के नाम से यह संसार में सर्वत्र उपलब्ध है। क्योंकि यह ज्ञान कोई प्रत्यक्ष परिणाम नहीं देता है, इसलिए संसार के युवा वर्ग का विश्वास इससे खत्म हो चुका है। मृत्यु के करीब पहुँचे हुए शक्तिहीन स्त्री-पुरुष ही जीवन में किये हुए काम को याद करके अपनी ही तस्वीर से भयभीत होकर इसे पाने का प्रयास कर रहे हैं। क्योंकि भय के कारण बुद्धि कुण्ठित हो जाती है, अतः वे असन्तुलित प्राणी कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते।

अध्यात्म का पतन उस समय प्रारम्भ हुआ, जब धर्म गुरुओं ने इसका सम्बन्ध पेट से जोड़ लिया। आज सभी धर्मों के धर्मगुरुओं को जीवित रहने के लिए हठ धर्मिता से अध्यात्म पर चलना पड़ रहा है। ऐसा करना उनकी मजबूरी है। इस हठधर्मी प्रवृत्ति ने संसार के लोगों को विद्रोही बना दिया।

इस प्रकार अध्यात्म एक तमाशा बन चुका है। सर्व भूतों के जनक आदि कारण के प्रति ऐसा भाव परिवर्तन विशेष का द्योतक है। यह वैज्ञानिक सच्चाई है कि जब किसी बात की अति हो जाती है तो उसका अन्त हो जाता है। ऐसा होना अनिवार्य भी है। क्योंकि अनादि काल से उत्थान और पतन का यह क्रम चला आ रहा है।

संसार का अन्धकार उस दिव्य ज्ञान ज्योति के उदय हुए बिना हटना असम्भव है। पहला दीपक जलना ही कठिन होता है, उसके बाद तो दीपक से दीपक जलने की प्रक्रिया के अनुसार पूरे विश्व में प्रकाश फैलने में देर नहीं लगेगी। जब यह मधुर स्वर लहरी संसार के वायु मण्डल में तरंगित होने लगेगी तो आम प्राणी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। इस प्रकार यह दिव्य प्रकाश, प्रकाश की गति से भी तेज, पूरे संसार में फैल जावेगा।

प्रतिरोधक शक्तियाँ संभल भी नहीं पाएंगी। परन्तु इसका यह मतलब नहीं कि वे बिना विरोध के शान्त हो जाएंगी। उस परमसत्ता को संसार से उनका सफाया करना है। अतः उस विकृति के सफाये के लिए अन्धेरे और उजाले का संघर्ष अनिवार्य है। इसके बिना पूर्ण शान्ति असम्भव है। यह क्रम अनादिकाल से चला आ रहा है। पाप का अन्त कुरुक्षेत्र में ही होता है। महर्षि श्री अरविन्द की यह घोषणा कि वह परमसत्ता भारत की भूमि पर 24 नवम्बर 1926 को अवतरित हो चुकी है, गलत नहीं है। उसके अवतरित होने का स्पष्ट अर्थ है, अन्धकार का सफाया। ऐसा अनादि काल से होता आया है। हमें इतिहास को ध्यान में रखते हुए ऐसे संघर्षों से घबराना नहीं चाहिए। क्योंकि ऐसा होना अनिवार्य है। ऐसा अनादि काल से होता आया है।

संसार में अन्धकार से जो संहार और हा-हा कार मचा हुआ है। वह पूर्ण शान्ति का उषाकाल है। दीपक जब बुझते समय तेज प्रकाश फैलाता है, वैसे ही अन्धकार मिटने से पहिले भयंकर तबाही मचाता है। यह प्रकृति का अटल नियम है।

11.12.1988

जीवन में बदलाव-By entering the spiritual life one opens to a **"new force"** which can change one's destiny.

-Sri Aurobindo 22.8.1937

आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करने से, व्यक्ति एक 'नई शक्ति' के लिए खुलता है, जो किसी के भागय को बदल सकता है।

सद्गुरुदेव की कृपा से सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

पूर्ण ज्ञान का योग

ज्ञान का लक्ष्य

-महर्षि श्री अरविन्द

समस्त अध्यात्म-जिज्ञासा 'ज्ञान' के एक ऐसे लक्ष्य की ओर अग्रसर होती है। जिसकी तरफ साधारणतः मनुष्य अपने मन की आँख नहीं फेरते, यह एक ऐसे सनातन, असीम एवं निरपेक्ष पुरुष या वस्तु की ओर अग्रसर होती है, जो हमारी इन्द्रियों के द्वारा ग्राह्य पार्थिव वस्तुओं या शक्तियों से भिन्न है, भले वह इनके अन्दर या इनके पीछे विद्यमान हो अथवा इनका उद्‌गम या स्रष्टा ही क्यों न हो।

इसका लक्ष्य ज्ञान की एक ऐसी भूमिका है जिसके द्वारा हम इन सनातन, असीम एवं निरपेक्ष का स्पर्श कर सकें, इनमें प्रवेश कर सकें या तादात्म्य द्वारा इन्हें जान सकें; इसका लक्ष्य एक ऐसी चेतना है जो विचारों, रूपों और पदार्थों-विषयक हमारी साधारण चेतना से भिन्न है। एक ऐसा ज्ञान जो वह चीज नहीं है जिसे हम ज्ञान कहते हैं, बल्कि एक स्वयं स्थित, नित्य एवं अनन्त वस्तु है।

और, यद्यपि मनुष्य के मनोमय प्राणी होने के कारण, यह ज्ञान के हमारे साधारण करणों से अपनी खोज आरम्भ कर सकती है अथवा यहाँ तक कि इसे आवश्यक रूप से ऐसा करना ही होता है फिर भी, इसे उतने ही आवश्यक रूप में उन कारणों के परे जाकर अतीन्द्रिय तथा अतिमानसिक साधनों और शक्तियों का प्रयोग करना होगा, क्योंकि यह किसी ऐसी चीज की खोज कर रही है जो स्वयं अतीन्द्रिय एवं अतिमानसिक है तथा मन और इन्द्रियों की पकड़ से परे है। यद्यपि मन और इन्द्रियों के द्वारा उसकी प्रथम झलक अवश्य प्राप्त हो सकती है या उसकी प्रतिबिम्बित आकृति दिखायी दे सकती है।

ज्ञान-योग की सभी परम्परागत प्रणालियाँ, उनके अन्य भेद चाहे जो हों, इस विश्वास या बोध के आधार पर आगे बढ़ती हैं कि सनातन एवं निरपेक्ष सत्ता विश्व रहित सत्ता की शुद्ध परात्पर अवस्था ही हो सकती है या कम-से-कम इसी अवस्था में निवास कर सकती है या फिर, वह असत्ता ही हो सकती है।

समस्त वैश्व सत्ता या वह सब कुछ जिसे हम सत्ता कहते हैं, अज्ञान की ही एक अवस्था है। यहाँ तक कि उच्चतम

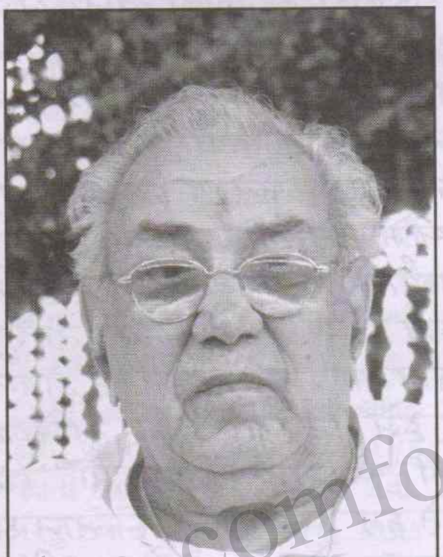

वैयक्तिक पूर्णता एवं आनन्दपूर्ण जागतिक स्थिति भी परम अज्ञान की अवस्था से कोई अच्छी चीज नहीं है।

पूर्ण सत्य के अन्वेषक को वैयक्तिक और जागतिक...सभी वस्तुओं एवं अवस्थाओं का कठोरतापूर्वक त्याग कर देना होगा। परम निश्चल आत्मा या चरम शून्य ही एकमात्र सत्य है, आध यात्मिक ज्ञान का एकमात्र विषय है। ज्ञान की जो भूमिका किंवा इस लौकिक चेतना से भिन्न, जो चेतना हमें प्राप्त करनी होगी, वह निर्वाण है, अर्थात् अहं का लय है, समस्त मानसिक, प्राणिक और शारीरिक क्रियाओं का, बल्कि सभी क्रियाओं का निरोध है, चाहे वे कोई भी क्यों न हों, वह परम प्रकाश युक्त निश्चलता है, आत्म-लीन और अनिर्वचनीय निर्व्यक्तिक प्रशान्तता का विशुद्ध आनन्द है।

इसकी प्राप्ति के साधन हैं ऐसा ध्यान और एकाग्रता जो अन्य सभी वस्तुओं को बहिष्कृत कर दें और मन की अपने विषय में पूर्ण तल्लीनता। कर्म करने की स्वीकृति खोज की प्रारम्भिक अवस्थाओं में ही दी जा सकती है जिससे वह जिज्ञासु के चित्त को शुद्ध करके उसे सदाचार और स्वभाव की दृष्टि से ज्ञान का उपयुक्त आधार बना दे। इस कर्म को भी या तो हिन्दू-शास्त्र के द्वारा कठोरतापूर्वक विहित पूजा सम्बन्धी क्रिया-कलाप तथा जीवन-सम्बन्धी नियत कर्तव्यों के अनुष्ठान तक ही सीमित रखना होगा या फिर इसे बौद्ध साधना के अनुसार, अष्टांग मार्ग के द्वारा भूतदया के उन कार्यों के परमोच्च अनुष्ठान की ओर प्रेरित करना होगा जो परहित के लिये 'स्व' के क्रियात्मक उच्छेद की ओर ले जाते हैं।

पर अन्त में, किसी भी तात्त्विक एवं विशुद्ध ज्ञानयोग में पूर्ण निश्चलता की प्राप्ति के लिये समस्त कर्मों को त्याग देना होगा। कर्म, मोक्ष के लिये तैयार तो कर सकता है, पर उसकी प्राप्ति नहीं करा सकता। कर्म के प्रति किसी भी प्रकार की अनवरत आसक्ति सर्वोच्च उन्नति के साथ असंगत है और आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति में एक अलंघ्य बाधा खड़ी कर सकती है।

संदर्भ-'योग समन्वय'
पुस्तक पृष्ठ-289

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

21 वीं सदी का भारत

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

इनके लक्षण इस प्रकार हैं —

(1) प्रातिभ – इससे भूत, भविष्य और वर्तमान एवं सुक्ष्म, ढकी हुई और दूर देश में स्थित वस्तुएं प्रत्यक्ष हो जाती हैं।

(2) श्रावण – इससे दिव्य शब्द सुनने की शक्ति आ जाती है।

(3) वेदन – इससे दिव्य स्पर्श का अनुभव करने की शक्ति आ जाती है।

(4) आदर्श – इससे दिव्य रूप का दर्शन करने की शक्ति आ जाती है।

(5) आस्वाद – इससे दिव्य रस का अनुभव करने की शक्ति आ जाती है।

(6) वार्ता – इससे दिव्य गन्ध का अनुभव करने की शक्ति आ जाती है।

20वीं सदी के ~~पहले~~ – अन्त से पहले-पहले इस बात का फैसला हो जावेगा कि ~~कौन~~ वह सहायक कौन है। इस सम्बन्ध में यहोवा ने यशायाह के 41:21 से 23 में उसी बात को अर्थात् भूत-भविष्य को दिखाने-सुनाने का आदेश देते हुए कहा है — "यहोवा कहता है, अपना मुकदमा लड़ो। याकूब का राजा कहता है अपने प्रमाण दो। वे उन्हें देकर हमें "दिखाएं" कि भविष्य में क्या होगा? पूर्व-काल की घटनाएं "दिखाओ" कि आदि में क्या-क्या हुआ, जिससे हम उन्हें सोचकर जान सकें कि भविष्य में उनका क्या फल होगा, वा होने वाली घटनाएं हमें सुना दो। भविष्य में जो कुछ घटेगा वह "दिखावो", तब हम मानेंगे, कि तुम ईश्वर हो। भला या बुरा कुछ तो करो, कि हम देख कर चकित हो जावें।"

इस प्रकार हिन्दुओं के दशवें अवतार के अवतरण का और ईसाइयों के सत्य के आत्मा के अवतरण का समय 20वीं सदी का आखिरी दशक ही पड़ता है। ईसाई दर्शन भी इस अवतरण को ईश्वर की संज्ञा देता है। मैथ्यू 23:39 "क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, कि अब से जब तक तुम न कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।"

क्रमशः अगले अंक में...

અદ્ભૂત સિદ્ધયોગ

સિદ્ધયોગ સાધનામાં પાળવાના નિયમો

(૧) સાધકે ગુરુદેવ સિયાગ પ્રતિ સંપુર્ણ શ્રદ્ધા અને સમર્પણ ભાવ રાખવો સાધકની શ્રદ્ધા અને સમર્પણ જેટલી વધારે હોય તેટલા જ પ્રમાણમાં એને સાધના સફળ થાય છે. જેમબેંક ખાતામાં જીૠદ્દૈહપ્ન નું રોકાણ ઓછું હોય તો ઓછું વ્યાજ મળે અને વધારે રોકાણ હોય તો વધારે વ્યાજ મળે તેમશ્રદ્ધાના પ્રમાણમાં તેનું ફળ પ્રાપ્ત થાય છે. ગુરુ પર શ્રદ્ધા ના હોય તો કા તો ઓછી હોય તો મંત્રજાપ અને ધ્યાનની અસર જેવી જોઈએ તેવી થતી નથી.

(૨).ગુરુદેવ પાસેથી દીક્ષા લીધા પછી એનું ઈચ્છિત પરિણામમેળવવા માટે સંપુર્ણ શ્રદ્ધા, એકાગ્રતા અને ખંત સિદ્ધયોગ સાધના કરવી. આ સાધના દરમિયાન બીજા કોઈ સંત, ગુરુ, બાબા, ભુવા, તાંત્રિક, માંત્રિક કે ફકીરની પાછળ જવું નહી. પોતે સ્વીકારેલ ગુરુ પર અડીખમરહેવું અને તેની જ આરાધના કરવી. અલગ અલગ ગુરુઓ પાછળ પડવાથી શ્રદ્ધા વહેંચાઈ જાય છે. પરિણામે સાધકના હાથમાં કંઈ જ આવતું નથી. દા.ત. એક ડૅાકટરનો અલાજ ચાલતો હોય ત્યારે આપણે બીજા ડૅાકટરનો ઈલાજ કરતા નથી. કારણ બંનેની દવા અને ટ્રીટમેન્ટ મીક્ષ થાય તો બીમારી દુર થવાને બદલે વધુ વણસી જવાની શકયતા છે. એટલે એક જ ગુરુ પર શ્રદ્ધા રાખીને સાધના કરવી.

(૩).સિદ્ધયોગ સાધના એ ઈશ્વર પ્રાપ્તિનો સર્વોત્તમમાર્ગ છે. કારણ કે જે બ્રહ્માંડમાં જે તેત્રીસ કરોડ દેવી - દેવતા પૂજાય છે એવા દેવોના દેવ મહાશિવ પાસે સિદ્ધયોગ નો ર્સતો જાય છે. જેમઆપણને ઝડપી પ્રવાસ માટે હાઈવે મળી ગયો હોય તો આપણે નાના ર્સતાઓ અને ગલીઓમાં જતાં નથી. એ જ પ્રમાણે સિદ્ધયોગનો ર્સતો મળઅયા પછી નાના મોટા કર્મકાંડ, મંદિરોના આંટાફેરા અને યાત્રા ધામપ્રવાસ વગેરેની જરૂર રહેતી નથી. બીજા ગુરુઓ કે સંતો અને કર્મકાંડ કરતા લોકો પ્રતિ આદરભાવ જરૂર રાખવો પરંતુ સિદ્ધયોગનો માર્ગ છોડવો નહી.

(૪).સિદ્ધયોગ સાધના એટલે સાક્ષાત ઈશ્વરના અલૌકિક તેની સાધના છે.તેની સામે કોઈ પણ ભૂત-પ્રેત, વળગાડ કે જાદુટોનાની અસર થતી નથી. એથી જ ગુરુદેવ સિયાગના શિષ્યે કોઈ પણ પ્રકારના ધાગા, દોરા, તાવીજ કે યંત્રોના બંધનમાં ફસાવું નહી. આ પ્રકારની કાલા જાદુ અથવા તાંત્રિક, માંત્રિક પાસે જવાથી સિદ્ધયોગ સાધનામાં ખલેલ પડે છે અને સાધક ગંભીર પ્રકારની મુશ્કેલીનો સામનો કરવો પડે છે.

(૫).સિદ્ધયોગ સાધના કરતી વખતે કોઈ બીમારીના કારણે ડૅાકટર કે વૈદ્યની દવા લેવી પડે તો જરૂર લેવી. પરંતુ દવાને વળગીના રહેવું. સાધક જેટલી શ્રદ્ધાથી ગુરુદેવને રોગમુક્તિ માટે પ્રાર્થના કરશે એટલા જ ઝડપથી એની બીમારી દવા લીધા વગર મટી ગયાનો અનુભવ તેને થશે. ડૅાકટરોએ જે દર્દીઓને જીવતા રહેવાની આશા છોડી દે દીધી હોય આવા અસંખ્ય દર્દીઓ ગુરુદેવ સિયાગના શરણે આવ્યા પછી મૃત્યુના કાંઠેથી પાછા ફરી અને સાજા થઈને નોર્મલ જીવન જીવી રહ્યા છે.

(૬).ભારતીય ધર્મશાસ્ત્રના અનુસાર મનુષ્યના આત્મિક ઉધ્ધાર કરવાની જવાબદારી ઈશ્વરે જેના વાણીમાં સત્યતા હોય એવી ગુરુને સોંપી છે. એટલે જ જે સદ્ગુરુ જીવન અને આધ્યાત્મિક જ્ઞાનનું દાન કરે છે એને ઈશ્વર ગણીને પૂજવું.

(૭).ધર્મગ્રંથો પ્રમાણે ગુરુની કૃપા સંપુર્ણ પ્રમાણે પ્રાપ્ત કરવા માટે ગુરુદક્ષિણા આપવી જરૂરી છે. સાધકે યથા શક્તિ તન (શ્રમ), મન (જ્ઞાનનો પ્રચાર), ધન આપીને ગુરુની સેવા કરવી એ જ સાચી ગુરુદક્ષિણા કહેવાય. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણે ગીતામાં કહ્યું છે તેમશિષ્ય ગુરુને આદર અને પ્રેમભાવથી જે કાંઈ ભેટ આપે ભલે એ ફુલ જેવી નાનામાં નાની વસ્તુ કેમન હોય એને જ ગુરુદક્ષિણા આપી એવું કહેવાય.

(૮).ગુરુકૃપાથી ભૌતિક લાભ જેવું કે ધન, સાંસારિક સુખ, પુત્ર પ્રાપ્તિ અથવા જમીન જાયદાદ મેળવ્યા બાદ સિદ્ધયોગ સાધના બંધ કરવી અને ગુરુદેવ પ્રતિ શ્રદ્ધા છોડી દેવી એ ઘણું જ અયોગ્ય કહેવાય.

આવું કરવાથી સાધકને મળેલ લાભ લાંબા સમય સુધી ટકતો નથી અને તે સંસારની અનેક મુશ્કેલીઓ પાછો ધકેલાય જાય છે. એટલે જ લાભ મેળવ્યા પછી પણ ગુરુદેવ ઉપર જીવનભર શ્રદ્ધા રાખવી જરૂરી છે.

સિદ્ધયોગ આરાધનામાં આડંબરની જરૂર નથી :

ગુરુદેવ સિયાગે બતાવેલી આરાધના ના વિશિષ્ટતા એ છે કે એમાં કોઈપણ જાતના આડંબરને સ્થાન નથી. આમાં વિશિષ્ટ પ્રકારના કપડા, ખાનપાન કે આસનની જરૂર હોતી નથી. સાધકને જે પહેરાવ ઠીક લાગે તે અને જે જગ્યા અનુકૂળ હોય તે જગ્યાએ સાધક ધ્યાન કરી શકે છે. પછી એ રૂમમાં હોય કે બહાર ખુલ્લામાં બેઠી હોય. ગુરુદેવના ઘણા શિષ્યો પ્રવાસ કરતી વખતે

www.the-comforter.org

व्यक्ति बूढ़ा कब होता है ?

तुम्हारी लम्बी उम्र तुम्हें बूढ़ा नहीं बनाती। तुम बूढ़े होते हो, जब तुम प्रगति करना बंद कर देते हो।

ज्योंहि तुम यह महसूस करने लगते हो कि जो तुम्हें करना था, वह कर चुके; ज्यों ही तुम यह सोचने लगते हो कि जो तुम्हें जानना था वह जान चुके, ज्यों ही तुम बैठ कर अपने किये के परिणामों को चाहते हो, इस भावना के साथ कि तुम जीवन में पर्याप्त कार्य कर चुके तो तुम तुरन्त बुढ़े हो जाते हो और तुम्हारा क्षय शुरू हो जाता है।

इसके विपरीत, जब तुम यह मानते हो कि जो जानना शेष है उसकी तुलाना में वह नगण्य है जो तुम जानते हो, जब तुम यह अनुभव करते हो कि जो कुछ तुमने किया है, वह उसका प्रारंभ-बिंदु मात्र है जो अभी करना शेष है, जब तुम भविष्य को उन अनन्त संभावनाओं से युक्त चमकते हुए आकर्षक सूर्य के तप में देखते हो जिन्हें सिद्ध करना अभी बाकी है, तब तुम युवा हो, भविष्य की समस्त उपलब्धियों से युक्त युवा और समृध्द, भले ही तुमने धरती पर कितने ही वर्ष बिताये हों।

और यदि तुम यह नहीं चाहते कि तुम्हारा शरीर तुम्हें निराश करे तो व्यर्थ की उत्तेजना में अपनी शक्तियों के अपव्यय से बचो। जो कुछ करो, शान्त एवं प्रकृतिस्थ संतुलन में करो। शान्ति और नीरवता में बहुत बड़ी शक्ति है।

वृद्धावस्था बड़ी उम्र हो जाने से नहीं आती बल्कि विकास और प्रगति करते रहने की अक्षमता या अस्वीकृति से आती है। मैंने बीस वर्ष के बूढ़ों और सत्तर वर्ष के युवाओं को देखा है। ज्यों ही मनुष्य जीवन में एक जगह स्थित हो जाने और अपने पिछले प्रयासों के लाभों की फसल काटने की इच्छा करता है, ज्यों ही मनुष्य यह सोचने लगता है कि उसे जो करना था कर चुका, जो पाना था पा चुका, संक्षेप में,

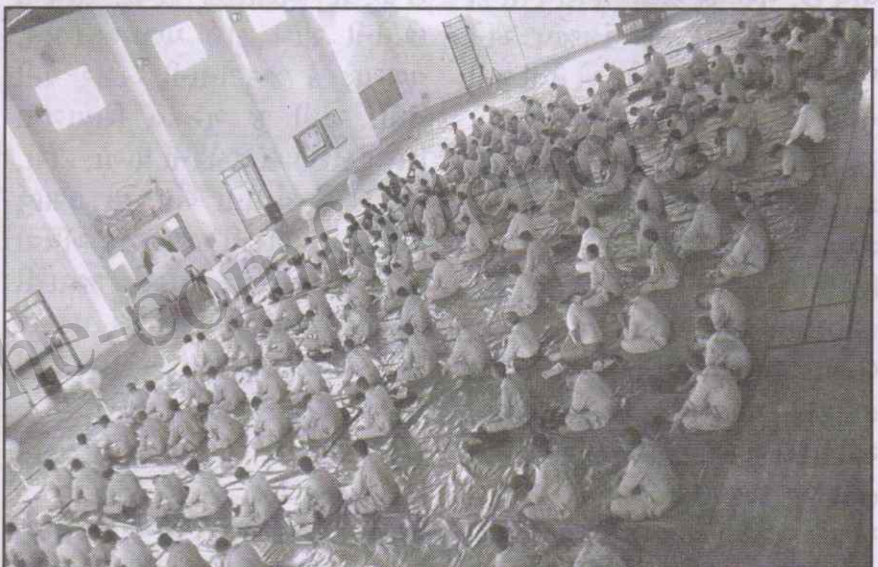

ज्यों ही वह प्रगति करना, परिपूर्णता के मार्ग पर अग्रसर होना बन्द कर देता है, उसका पिछड़ जाना और बुढ़ा होना निश्चित हो जाता है।

......एक ऐसी वृद्धावस्था है जो उम्र के करण आयी वृद्धावस्था की अपेक्षा कहीं अधिक खतरनाक और कहीं अधिक वास्तविक है: विकास करने और प्रगति करने की अक्षमता।

ऐसे युवा हैं जो वृद्ध हैं और ऐसे वृद्ध हैं जो युवा हैं। यदि तुम अपने भीतर प्रगति एवं रूपान्तर की यह अग्निशिखा वहन करते हो, यदि तुम सब कुछ पीछे छोड़ने के लिये तैयार हो ताकि तुम चौकस कदमों से आगे बढ़ सको, यदि तुम नयी प्रगति, नयी उन्नति, नये रूपान्तर के लिये सदैव खुले हो तो तुम सदा सर्वदा युवा हो। लेकिन यदि तुम जो कर चुके हो, उसी से संतुष्ट होकर बैठे रहते हो, यदि तुम्हें यह लगता है कि तुम अपने लक्ष्य तक पहुँच चुके हो और अब अपने प्रयासों के फल का उपभोग करने के अतिरिक्त कुछ करने को शेष नहीं बचा है, तब समझो तुम्हारा आधे से अधिक शरीर कब्र में है: यह जर्जरता और सच्ची मृत्यु है।

जो कुछ किया जा चुका है, वह उसकी तुलना में कुछ भी नहीं है, जो करने के लिये शेष है।

पीछे मत देखो। आगे देखो- हमेशा और हमेशा आगे बढ़ते चलो। -श्रीमां

गतांक से आगे...

! ! मेरे गुरुदेव ! !

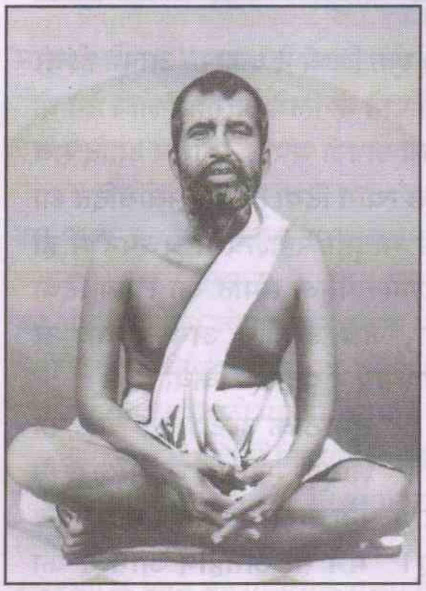

इस प्रकार आदमियों के झुण्ड के झुण्ड, मेरे गुरुदेव के श्री वचन सुनने आते थे और वे चौबीस घण्टे में से बीस घण्टे तक उनसे बातें करते रहते थे और वह भी एक दिन की बात नहीं, बल्कि महीनों तक यही क्रम जारी रहा, जिसका फल यह हुआ कि अन्त में उनका शरीर अत्यन्त परिश्रम के कारण टूट गया।

उन्हें मानव जाति के प्रति इतना अगाध प्रेम था कि उनके पास कृपा-लाभार्थ आनेवाले हजारों में से अत्यन्त सामान्य मनुष्य भी उस कृपा-लाभ से वंचित नहीं रहता था। फलस्वरूप धीरे धीरे उन्हें गले का एक बड़ा भयंकर रोग हो गया, परन्तु फिर भी आग्रह करने पर भी वे इतनी मेहनत करना नहीं छोड़ते थे। जैसे ही वे सुनते कि बाहर आये हुए लोग उनसे मिलने के इच्छुक हैं तो उन्हें अन्दर बुलाये बिना वे नहीं मानते थे और उनके सब प्रश्नों का उत्तर देते थे। जब उन्हें ऐसा करने से रोका जाता था तो वे उत्तर देते थे, 'मैं परवाह नहीं करता। यदि एक भी मनुष्य की सहायता हो सके तो मैं ऐसे हजारों शरीर छोड़ने को तैयार हूँ... एक आदमी की भी सहायता करना अपूर्व पुरुषार्थ है। उनके लिए विश्राम मानो था ही नहीं। एक बार एक मनुष्य ने उनसे पूछा, ''महाराज, आप बड़े योगी हैं...आप अपना मन थोड़ा अपने शरीर की ओर ही क्यों नहीं लगा देते, जिससे आपकी बीमारी ठीक हो जाय ?''

पहले तो उन्होंने उत्तर नहीं दिया, परन्तु जब वही प्रश्न कई बार पूछा गया तो उन्होंने धीरे से कहा, ''मित्र, मैं समझता था कि तुम ज्ञानी हो, परन्तु तुम भी संसार के अन्य लोगों के समान ही बातें करते हो। यह सारा मन मैंने ईश्वरार्पण कर दिया है तो क्या अब मैं इसे वापस ले लूं और इसे इस शरीर में लगाऊँ, जो आत्मा का केवल पिंजड़ा है ?''

इस प्रकार वे लोगों को उपदेश देने लगे, और अन्त में यह खबर फैल गयी कि उनका अन्तकाल समीप आ गया है। तब तो पहले की अपेक्षा कहीं अधिक झुण्डों में लोग उनके पास आने लगे। तुम यह अनुमान नहीं कर सकते कि भारत में ऐसे महान् साधु-संतों के समीप लोग किस प्रकार जाते हैं ? कैसे वे उनके चारों ओर भीड़ जमा कर लेते हैं ? और उनके जीवन-काल में ही उन्हें देवतास्वरूप पूजते हैं। हजारों उनके पहने हुए वस्त्रों की कोर को ही छूने मात्र की प्रतीक्षा करते रहते हैं। दूसरों की आध्यात्मिकता का हृदय से आदर करने से ही मनुष्य में आध्यात्मिकता उत्पन्न होती है। मनुष्य जो कुछ हृदय से चाहता और आदर करता है, वही उसे मिल जाता है...राष्ट्रों के सम्बन्ध में भी ठीक यही बात है। यदि तुम भारत में जाकर एक राजनीतिक भाषण दो तो वह चाहे जितना ओजस्वी क्यों न हो, तुम्हें वहाँ बहुत कम श्रोता मिलेंगे, परन्तु यदि तुम धर्म का प्रचार करने जाओ और इसके बारे में केवल शाब्दिक विवेचन ही न करो, वरन् उसे अपने जीवन में उतारो भी तो सैकड़ों मनुष्य केवल उसे सुनने ही न आयेंगे, वरन् तुम्हारे चरण भी स्पर्श करेंगे।

जब लोगों ने यह सुना कि ये महापुरुष सम्भवतः उन्हें शीघ्र ही छोड़कर चले जायेंगे, तो वे उनके पास पहले की अपेक्षा और अधिक संख्या में आने लगे और मेरे गुरुदेव अपने स्वास्थ्य की थोड़ी सी भी चिन्ता न करते हुए उन्हें निरन्तर उपदेश देते रहे। हम लोग भी उन्हें इस बात से रोक न सके।

बहुत से लोग तो बड़ी बड़ी दूर से आते थे और मेरे गुरुदेव जब तक उनके प्रश्नों का उत्तर नहीं दे देते थे, तब तक विश्राम नहीं करते थे। वे यही कहा करते थे...''जब तक मैं बोल सकता हूँ, तब तक मैं उन्हें उपदेश देता रहूँगा।'' और उन्होंने अपने कथन को सदा पूरा किया। एक दिन उन्होंने हम सब लोगों से कहा-'मैं आज इस शरीर का त्याग करूँगा'; और वेदों के परम पवित्र शब्दों का उच्चारण करते करते उन्होंने महासमाधि में प्रवेश किया।

संदर्भ-विवेकानन्द साहित्य-7

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

संध्याकाल को उनके शिष्यों के आने तक मैं अकेला ही उनके साथ रहा। शिष्यों के आने के बाद भादुड़ी महाशय ने अपना अद्वितीय प्रवचन शुरू किया। शांत बाढ़ की तरह अपने श्रोताओं के मन के कूड़े-करकट को बहा ले जाकर, वे उन्हें ईश्वर की ओर ले चले। विशुद्ध बंगाली में वे हृदयस्पर्शी दृष्टान्त देते जा रहे थे।

उस दिन भादुड़ी महाशय संत-संगति को पाने के लिये, अपने राजसी जीवन का त्याग करनेवाले मध्ययुगीन राजपूत रानी मीराबाई के जीवन से संबंधित कुछ दार्शनिक तत्त्वों को समझा रहे थे। एक बार एक महान् संन्यासी सनातन गोस्वामी ने मीराबाई से मिलने से इसलिये इनकार कर दिया कि वे स्त्री थीं। उत्तर में मीराबाई ने जो कुछ कहा उसे सुनकर गोस्वामी विनम्र बनकर उनके चरणों में नत हो गये।

''महात्माजी से कहो,'' मीराबाई ने कहा, ''कि मैं नहीं जानती थी कि सृष्टि में ईश्वर के अतिरिक्त और भी कोई पुरुष है। क्या हम सब उनके सामने स्त्रियाँ नहीं हैं?'' (शास्त्रों का एक सिद्धांत यह है कि केवल ईश्वर ही एकमात्र सृजनक्षम पुरुष तत्त्व है, उसकी सृष्टि तो केवल निष्क्रिय माया है।)

मीराबाई ने भक्तिरस से ओतप्रोत अनेक पदों की रचना की है जो आज भी भारत में प्रेम और श्रद्धा के साथ गाये जाते हैं। उनमें से एक है:

साधन करना चाहि रे मनवा,
भजन करना चाहि।
प्रेम लगाना चाहि रे मनवा,
प्रीत लगाना चाहि।।
नीर-नहन से हरि मिले
तो जल जन्तु होई।
फल-मूल खाकर हरि मिले
तो बादूर बंदराई।।
तुलसी पूजने से हरि मिले
तो मैं पूजुं तुलसी झाड़।
पत्थर पूजने से हरि मिले
तो मैं पूजुं पहाड़।।
तृण भक्षण से हरि मिले
तो बहुत मृगी अजा।
स्त्री छोड़न से हरि मिले
तो बहुत मिले खोजा।।
दूध पीवन से हरि मिले
तो बहुत वत्स बाला।
मीरा कहे बिना प्रेम से,
न मिले नन्दलाला।।

भादुड़ी महाशय जहाँ यौगिक आसन में बैठते थे, वहीं उनके पास पड़ी उनकी खड़ाऊँ पर कई शिष्य प्रणामी रख देते थे। भारत में प्रचलित इस श्रद्धापूर्ण चढ़ावे का अर्थ है कि शिष्य अपनी सम्पदा गुरु के चरणों में अर्पित कर रहा है। कृतज्ञ मित्रों के रूप में प्रभु ही अपने भक्तों की देखभाल करते रहते हैं।

''गुरुदेव आप महान् हैं।'' उस पितामहतुल्य ऋषि से विदा लेते समय उनकी ओर भक्तिपूर्ण दृष्टि से देखते हुए एक शिष्य ने कहा। ''आपने ईश्वर को पाने के लिये और हमें ज्ञान देने के लिये अपनी संपति, आराम आदि सब कुछ त्याग दिया।'' यह सर्वविदित था कि भादुड़ी महाशय ने बचपन में ही विशाल पैतृक संपति को त्याग दिया था, जब उन्होंने अनन्यभाव से योगमार्ग में पदार्पण किया।

''तुम ठीक उल्टी बात बोल रहे हो!'' भादुड़ी महाशय के मुखारविंद पर भर्त्सना के अत्यंत सौम्य भाव प्रकट हुए। ''मैंने तो अंतहीन आनन्द का विराट साम्राज्य प्राप्त करने के लिये कुछ थोड़े-से रुपये और कुछ तुच्छ सुखविलासों को छोड़ दिया। फिर मैंने कोई त्याग कहाँ किया है? और उस निधि को बाँटने में जो आनन्द मिल सकता है, उसका मुझे ज्ञान है। इसे क्या त्याग कहा जा सकता है? अल्पदृष्टि वाले सांसारिकजन ही वास्तव में सच्चे त्यागी हैं! वे अद्वितीय दिव्य संपति को संसार के मुट्ठी भर तुच्छ खिलौनों के लिये त्याग देते हैं!''

त्याग की इस लोकविरुद्ध व्याख्या को सुनकर मेरी हँसी छूट गयी, जिसमें किसी भी भिक्षुक सन्त को तो कुबेर का मुकुट पहनाया जाता है और धनगर्भित करोड़पतियों को अनभिज्ञ शहीद बना दिया जाता है।

''विधि का विधान हमारे भविष्य की योजना किसी भी बीमा कंपनी से अधिक अच्छी तरह बनाता है।'' उनके ये निष्कर्षात्मक शब्द उनकी अपनी श्रद्धा का अनुभव सिद्ध धर्म था।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के बारे में

प्रकृति का यह प्रस्ताव नहीं है कि मनुष्य वर्तमान मानव-प्राणी के सांचे में ही, उसी प्रतीक के सांचे में जो हम हैं, एक भिन्न प्रकार का उच्चतर मानसिक, नैतिक और भौतिक प्ररूप बनाये। वह उस सामान्य प्ररूप को एकदम तोड़ देना चाहती है ताकि एक नयी प्रतीक सत्ता की ओर बढ़ सके, जो वर्तमान मनुष्य से उसी तरह अतिप्राकृतिक होगी जैसे वर्तमान मनुष्य निचले पशु से भिन्न है।

इस बात में संदेह हैं कि शुद्ध मानव सांचे में प्रकृति उस हद से बहुत आगे जा सकती है, जहाँ तक वह जा चुकी है, उदाहरण के लिये वह मानसिक प्ररूप में न्यूटन, शेक्सपीयर, सीजर या नेपोलियन से ज्यादा ऊँचे, नैतिक प्ररूप में बुद्ध, ईसा या सन्त फ्रांसिस से बढ़कर, शारीरिक प्ररूप में यूनानी पहलवानों या आधुनिक उदाहरण दें तो सैडो या राममूर्ति से बढ़कर प्ररूप पैदा कर सकती है।

वह मानसिक और नैतिक या नैतिक, मानसिक और भौतिक शक्तियों का ज्यादा अच्छा मेल बिठा सकती है परंतु क्या वह कनफ्यूशस या सुकरात के स्तर से बहुत ऊपर की कोई चीज पैदा कर सकती है ? यह ज्यादा संभव है और सच प्रतीत होता है कि इस क्षेत्र में प्रकृति ज्यादा ऊँचे स्तर को और ज्यादा अच्छे समुच्चय को व्यापक बनाना चाहती है।

लेकिन हमें यह मानने की भी जरूरत नहीं है कि वह सभी मनुष्यों को एक ही स्तर पर लाना चाहती है क्योंकि यह स्तर को नीचा करने से ही हो सकता है। प्रकृति में सबसे निचले और सबसे कम विकसित रूपों को छोड़कर कोई भी चीज असमानताओं से मुक्त नहीं है। जितना अधिक प्रयास किया गया हो, जाति की शरीर-रचना जितनी अधिक संपन्न हो, असमानता के अवसर भी उतने ही अधिक होते हैं।

मनुष्य जैसी ऊँची और विकसित प्राकृतिक प्रवृत्ति में वैयक्तिक अवसर की समानता की कल्पना की जा सकती है परंतु प्राकृतिक शक्तियों और उपलब्धियों की समानता तो पुष्प मात्र है। शक्तियों का सामान्यीकरण अथवा सामग्री की वृद्धि स्वाभाविक प्राप्ति के स्तर में कोई फर्क न लायेगी। आधुनिक वैज्ञानिक की समस्त एकत्रित खोजें और

विभिन्न जानकारियाँ उसे मानसिक तौर पर अफलातून या सुकरात से श्रेष्ठ न बना देंगी। उसमें न तो अधिक कुशाग्र मन है, न अधिक प्रबल मानसिक शक्ति।

आधुनिक लोकोपकार के विभिन्न कायाकलाप बुद्ध या सन्त फ्रांसिस से बड़ा नैतिक प्ररूप न बना सकेंगे। मोटरकार की खोज खोयी हुई तेज गति और सहिष्णुता की भरपाई न कर सकेगी और न जिमनास्टिक्स नीग्रो या अमेरीकन इंडियन की शारीरिक क्षमता को वापस ला सकेगी।

अतः हम मानव प्रतीक के अंदर प्रकृति की संभावनाओं की सीमा देखते हैं, जिन्हें स्वयं प्रतीक के स्वभाव ने निश्चित किया है और प्रकृति ने अपने प्रयास में स्वीकार किया है।

फिर भी यह प्रश्न रहता है कि क्या इन सीमाओं में रहते हुए मानव प्रतीक की सब संभावनाओं को पूरा करना प्रकृति का मुख्य कार्य है ? बल्कि यह मनुष्य की मुख्य तल्लीनता है और जब मानव बुद्धि प्रकृति की प्रगति में हस्तक्षेप करती है तो वह भी यह दिशा ले लेती है।

अगर प्रकृति को उसी पर छोड़ दिया जाय, तब तो ऐसा लगता है मानो वह, मनुष्य के हस्तक्षेप का भी उपयोग करते हुए, सांचे को पूर्ण बनाने पर नहीं, उसे तोड़ने पर तुली हुई है। अपवाद हैं उसके अधिक विकसित व्यक्ति और अधिक साहसपूर्ण आन्दोलन।

वह सामान्य मानव को सुरक्षा प्रदान करना चाहती है। लेकिन जब कभी वह किसी नये प्रतीक की ओर, पिछली जाति को नष्ट किये बिना बढ़ना चाहती है तो यही उसकी पद्धति होती है। मनुष्य जितना अधिक सभ्य बनता है, वह उसे नैतिक असाधारणताओं, दुर्गुणों और सद्गुणों की अतियों, उसी प्ररूप के गुण, अवगुणों द्वारा उतना ही अधिक तंग करती है।

वह जितना ज्यादा बौद्धिक बनता है, जितना ज्यादा बुद्धिवाद को अपनी अंतिम सीमा बनाने पर आग्रह करता है, उतना ही ज्यादा प्रकृति असंतुष्ट होती है। और शोर मचाती है कि वह अपनी सहज वृत्तियों और अंतर्भासों को विकसित करे। ❖❖❖

संदर्भ-श्री अरविन्द, 'मानव से अतिमानव की ओर' पुस्तक से... क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के आधार

महर्षि श्री अरविन्द

श्रद्धा, अभीप्सा और आत्मसमर्पण

तुम्हारे सभी अंग मूलतः समर्पित हो चुके हैं, परंतु उन सभी अंगों में और उनकी सभी क्रियाओं में, पृथक्-पृथक् और संयुक्त रूप में, हृत्पुरुषोचित आत्मदान की भावना को धीरे-धीरे बढ़ाकर इस समर्पण को पूर्ण बनाना होगा।

भगवान् के द्वारा उपभुक्त (उपयोग में लिया हुआ, Utilized) होने का अर्थ है पूर्ण रूप से समर्पित हो जाना, जिसके फलस्वरूप साधक यह अनुभव करता है कि भागवत उपस्थिति, शक्ति, ज्योति, आनंद ने उसकी सार सत्ता को अधिकृत कर रखा है, स्वयं उसने इन सब चीजों को अपनी तृप्ति के लिये अधिकृत नहीं किया है। स्वयं अधिकार करने की अपेक्षा इस प्रकार समर्पित और भगवान् के द्वारा अधिकृत होने में बहुत अधिक आनंद मिलता है। साथ-ही-साथ इस समर्पण के फलस्वरूप अपनी सत्ता और प्रकृति के ऊपर एक प्रकार का शांत और आनंदप्रद प्रभुत्व भी प्राप्त होता है।

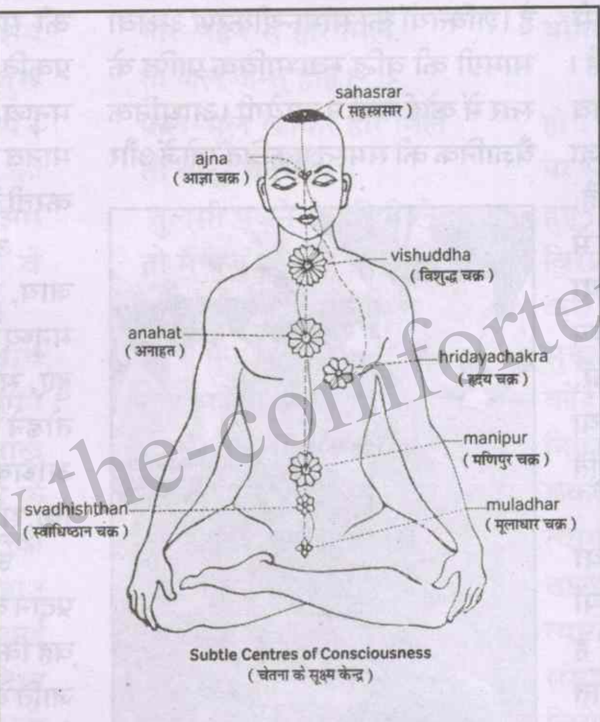

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

हृत्पुरुष को सामने ले आओ और उसे वहीं बनाये रखो तथा उसकी शक्ति को मन, प्राण और शरीर के ऊपर प्रयुक्त करो जिसमें वह अपनी अनन्य अभीप्सा, श्रद्धा-विश्वास और समर्पण के बल को, झुका हुआ हो, ज्योति और सत्य से दूर चला गया हो, उसे तुरंत और प्रत्यक्ष रूप में पहचान लेने के अपने सामर्थ्य को उनके (मन, प्राण और शरीर के) अंदर संचारित कर सके।

अहंकार के जितने भी रूप हो, उन सबको निकाल बाहर करो; उसे अपनी चेतना की प्रत्येक क्रिया में से दूर कर दो।

विश्वव्यापी चेतना को विकसित करो। अपनी अहं-केंद्रित दृष्टि को विशालता में, नैर्व्यक्तित्व में, विश्वगत भगवान् की अनुभूति में, विश्व शक्तियों की प्रत्यक्ष प्रतीति में और जागतिक अभिव्यक्ति, विश्वलीला की सत्योपलब्धि तथा रहस्यबोध में तल्लीन हो जाने दो।

अहंकार के स्थान में अपनी सत्य-सत्ता को प्राप्त करो जो भगवान् का अंश है, विश्वजननी से उत्पन्न हुआ है और इस अभिव्यक्ति का यंत्र है। परंतु भगवान् का एक अंश, एक यंत्र होने का जो यह बोध है वह सब प्रकार के गर्व, अहंबोध या अहंकार के दावों से या श्रेष्ठत्वस्थापन, मांग या वासना से रहित होना चाहिये। कारण, यदि ये सब चीजें वहाँ हों तो वह समझना होगा कि यह यथार्थ वस्तु नहीं है।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

मनुष्य और विकास

चेतना का परिवर्तन ही मुख्य तत्त्व और प्राथमिक गति होगा। भौतिक हेर-फेर गौण तत्त्व और परिणाम होंगे। जब अंतरात्मा की ज्वाला, चैत्य ज्वाला हृदय और मन में समर्थ हो जाये और प्रकृति तैयार हो तो मनुष्य के लिये चेतना का यह रूपांतर हमेशा संभव होगा।

अगर यह मान लिया जाये कि उसका अगला चरण आध्यात्मिक और अतिमानसिक सत्ता है तो जाति में आध्यात्मिक दबाव को प्रकृति के इरादे का चिह्न माना जा सकता है, यह इस बात का भी चिह्न है कि मनुष्य में अपने अंदर संक्रमण को संपादित करने की या प्रकृति को उसे संपादित करने में सहायता करने की क्षमता है।

यदि पशुसत्ता में एक ऐसे प्ररूप का आविर्भाव, जो कुछ बातों में वानर-जाति का था लेकिन फिर भी आरंभ से ही मानवता के तत्त्वों से संपन्न था, मानव विकास का उपाय था तो मनुष्य में मानसिक पशु-मानवता से मिलते-जुलते आध्यात्मिक प्ररूप का प्रकट होना, जिस पर आध्यात्मिक अभीप्सा की छाप लगी हो, स्पष्टतः प्रकृति का **आध्यात्मिक और अतिमानव** सत्ता की विकसनशील उत्पत्ति का उपाय होगा।

प्रासंगिक रूप से यह प्रस्ताव रखा जा सकता है कि यदि विकास की इस प्रकार की **पराकाष्ठा अभिप्रेत** है और मनुष्य को उसका माध्यम होना है तो कुछ गिनी-चुनी विशेष रूप से विकसित मानव सत्ताएँ ही नये रूप को आकार देंगी और नये जीवन की ओर गति करेंगी। एक बार यह हो जाये तो बाकी सारी मानव जाति प्रकृति की **आध्यात्मिक अभीप्सा** की अवस्था से, फिर से पतित हो जायेगी; क्योंकि तब फिर प्रकृति के उद्देश्य के लिये उसकी आवश्यकता न रहेगी और वह अपनी सामान्य स्थिति से निष्क्रिय बनी रहेगी। समान रूप से यह तर्क दिया जा सकता है कि अगर वास्तव में विकसनशील कोटियों में से होते हुए अंतरात्मा का पुनर्जन्म द्वारा **आध्यात्मिक शिखार की ओर आरोहण होता है** तो मानव श्रेणीक्रम का बना रहना जरूरी है, क्योंकि, अन्यथा मध्यवर्ती चरण में सबसे अधिक आवश्यक चरण का अभाव होगा। यह तो एकदम स्वीकार कर लेना चाहिये कि सारी मानव-जाति के मिलकर एक साथ अतिमानसिक स्तर तक उठ जाने की तनिक भी सम्भाव्यता या संभावना नहीं है।

जिस चीज का संकेत किया जा रहा है वह ऐसी क्रांतिकारी या आश्चर्यजनक चीज नहीं है, केवल मानव मानस सत्ता में क्षमता की बात है कि जब वह विकसनशील प्रेरणा के अमुक स्तर या अमुक बिंदु के दबाव तक पहुँच जाये तो वह चेतना के उच्चतर लोक और उसके सत्ता में मूर्त होने की ओर बल लगाये।

निश्चय ही इस शरीर-धारण के कारण प्रकृति के साधारण गठन में परिवर्तन आयेगा, निश्चय ही उसके मानसिक, भावनामय और संवेदनात्मक गठन का और एक बड़ी हदतक शारीरिक चेतना और हमारे जीवन और ऊर्जाओं के भौतिक अनुकूलन में परिवर्तन आयेगा।

लेकिन चेतना का परिवर्तन ही मुख्य तत्त्व और प्राथमिक गति होगा। भौतिक हेर-फेर गौण तत्त्व और परिणाम होंगे। जब अंतरात्मा की ज्वाला, चैत्य ज्वाला हृदय और मन में समर्थ हो जाये और प्रकृति तैयार हो तो मनुष्य के लिये चेतना का यह रूपांतर हमेशा संभव होगा।

आध्यात्मिक अभीप्सा मनुष्य के अंदर अंतर्जात होती है क्योंकि वह पशु से भिन्न, अपूर्णता और सीमा से अभिज्ञ रहता है और यह अनुभव करता है कि यह प्रवृत्ति जाति में से कभी पूरी तरह मिटनेवाली नहीं लगती। मानव मानसिक स्थिति तो हमेशा रहेगी लेकिन केवल पुनर्जन्म के क्रम में एक स्तर के रूप में नहीं बल्कि आध्यात्मिक और अतिमानसिक स्थिति की ओर खुले चरण के रूप में।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि मानव मन और शरीर का धरती पर आविर्भाव, विकास के मार्ग तथा प्रक्रिया में एक निर्णायक पग का चिह्न है, एक निर्णायक परिवर्तन है, यह निरा पुरानी लीकों का जारी रहना नहीं है।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

भगवान् की अवतरण-प्रणाली

हम देखते हैं कि मनुष्य में परमेश्वर का अवतरण अर्थात् परमेश्वर का मानवरूप और मानव-स्वभाव-धारण एक ऐसा रहस्य है जो गीता की दृष्टि में स्वयं मानव-जन्म के चिरंतन रहस्य का एक दूसरा पहलू है; क्योंकि मानव-जन्म मूलतः, बाह्यतः न सही, ऐसा ही आश्चर्यमय व्यापार है।

प्रत्येक मनुष्य का सनातन और विराट् आत्मा स्वयं परमेश्वर है; उसका व्यष्टिभूत आत्मा भी परमेश्वर का ही अंश है (ममैवांशः) जो निश्चय ही परमेश्वर से कटकर अलग हुआ कोई टुकड़ा नहीं,-कारण परमेश्वर के सम्बन्ध में कोई ऐसी कल्पना नहीं की जा सकती कि वे छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटे हुए हों, बल्कि वह एक ही चैतन्य का आंशिक चैतन्य है, एक ही शक्ति का शक्त्यंश है, सत्ता के आनन्द के द्वारा जगत्-सत्ता का आंशिक आनन्द-उपभोग है, और इसलिए व्यक्त रूप में या यह कहिए कि प्रकृति में यह जीव उसी एक अनन्त अपरिच्छिन्न पुरुष का एक सांत परिच्छिन्न भाव है।

इस परिच्छिन्नता की जो छाप उसपर पड़ी है वह एक ऐसा अज्ञान है जिससे वह न केवल उन परमेश्वर को जिनसे वह आया, बल्कि उन परमेश्वर को भी भूल जाता है जो सदा उसके अंतर में विराजमान हैं, उसकी अपनी प्रकृति के गुह्य हृद्देश में अवस्थित हैं और उसके अपने मानवचैतन्य के देवालय की अंतर्वेदी में प्रच्छन्न अग्नि के समान प्रज्वलित हैं।

मनुष्य उन्हें नहीं जानता, क्योंकि उसकी आत्मा की आँखों पर और उसकी समस्त इन्द्रियों पर उस प्रकृति की, उस माया की छाप लगी हुई है जिसके द्वारा वह परमेश्वर की सनातन सत्ता से बाहर निकालकर अभिव्यक्त किया गया है; प्रकृति ने उसे भागवत सत्व की अत्यंत मूल्यवान् धातु से सिक्के के रूप में ढाला है, पर उस पर अपने प्राकृत गुणों के मिश्रण का इतना गहरा लेप चढ़ा दिया है, अपनी मुद्रा की और पाशविक मानवता के चिह्न की इतनी गहरी छाप लगा दी है कि

यद्यपि भागवत भाव का गुप्त चिह्न वहाँ मौजूद है लेकिन वह आरम्भ में दिखायी नहीं देता, उसका बोध होना सदा ही दुस्तर होता है, उसका पता चलता है तो केवल आत्म-स्वरूप के रहस्य की उस दीक्षा से जो बहिर्मुख मानवता से ईश्वराभिमुख मानवता का पार्थक्य स्पष्ट दिखा देती है।

अवतार में अर्थात् दिव्य जन्म प्राप्त मनुष्य में वह भागवत सत्व लेप के रहते हुए भी भीतर से जगमगा उठता है; प्रकृति की मुहरछाप वहाँ केवल रूप के लिये होती है, अवतार की दृष्टि अंतःस्थित ईश्वर की दृष्टि होती है, उनकी जीवन-शक्ति अंतःस्थित ईश्वर की जीवन-शक्ति होती है और वह धारण की हुई मानव-प्रकृति की मुहरछाप को भेद कर बाहर निकल पड़ती है; ईश्वर का यह चिह्न, अंतरस्थ अंतरात्मा का यह चिह्न कोई बाह्य या भौतिक चिह्न न होने पर भी उनके लिए स्पष्ट बोधगम्य होता है, जो उसे देखना चाहें या देख सकें; आसुरी प्रकृति अवश्य ही यह सब नहीं देख सकती, क्योंकि वह केवल शरीर को देखती है आत्मा को नहीं, वह बाह्य सत्ता को देखती है अंतःसत्ता को नहीं, वह परदे को देखती है उसके भीतर के पुरुष को नहीं।

सामान्य मानव जन्म में मानवरूप धारण करने वाले जगदात्मा जगदीश्वर का प्रकृति भाव ही मुख्य होता है; अवतार के मनुष्य-जन्म में उनका ईश्वरभाव प्रकट होता है। एक में ईश्वर मानव-प्रकृति को अपनी आंशिक सत्ता पर अधिकार और शासन करने देते हैं और दूसरे में वे अपनी अंशसत्ता और उसकी प्रकृति को अपने अधिकार में लेकर उस पर शासन करते हैं।

गीता हमें बतलाती है कि साधारण मनुष्य जिस प्रकार विकास को प्राप्त होता हुआ या ऊपर उठता हुआ भागवत जन्म को प्राप्त होता है उसका नाम अवतार नहीं है, बल्कि भगवान् जब मानवता के अंदर प्रत्यक्ष रूप में उतर आते हैं और मनुष्य के ढांचे को पहन लेते हैं, तब वह अवतार कहलाते हैं।

संदर्भ-श्री अरविन्द रचित
'गीता प्रबंध' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सनातन धर्म (हिन्दू धर्म) का उत्थान

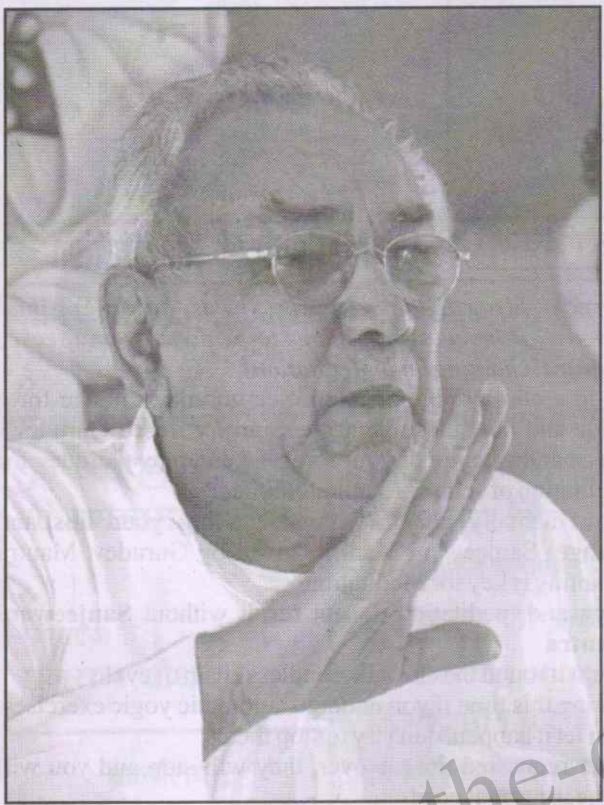

"अब इस देश का, इस धर्म का, इस संस्कृति का उत्थान शुरू हो गया है। हमारे पतन के काल को ऋषि-मुनि नहीं रोक सके, क्योंकि कालचक्र अबाध गति से चलता आया है।

अब इस दर्शन का उत्थान चक्र शुरू हो गया है, संसार की कोई शक्ति इसके उत्थान को नहीं रोक सकती है, किसी में वो सामर्थ्य नहीं है।

www.the-comforter.org

श्री अरविन्द के अनुसार-

" इसे (हिन्दू धर्म के उत्थान को) रोकने की कल्पना करना ही पागलपन है।"

–समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

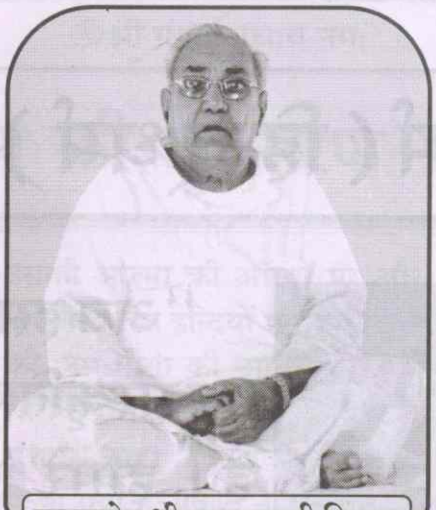

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

ध्यान करके देखें।

► ध्यान की विधि ◄

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

► Method of Meditation ◄

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (**Enlightened**) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (**Key**) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (**Round the Clock**) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

www.the-comforter.org

यादों के पल - जोधपुर आश्रम में शक्तिपात-दीक्षा कार्यक्रम के दौरान मंच पर विराजमान सद्गुरुदेव सियाग।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की प्रथम अमेरिका यात्रा। (जुलाई 2007)

comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

www.the-comforter.org

नाम (मंत्र) जप

- हर युग में मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य को ध्यान में रखकर ही आराधना की विधि तय होती है। अब कलियुग में केवल हरि नाम का जप ही सारे कष्टों से छुटकारा देता है। कलियुग केवल नाम आधारा, सुमिर सुमिर नर उतरहि पारा।
- बड़ी सीधी आराधना है, आपको कुछ नहीं करना, बस भगवान् का नाम ही जपना है, उसी से परिवर्तन आ जाएगा।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,
श्रीमान्

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी